# रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की पाकीजह ज़िन्दगी

मुस्तनद किताबों के हवाले से

*बच्चों के लिए इस्लामी कोर्स*


मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी

(सदर- जमअ़ीयत पयामे अम्न, लखनऊ)



प्रकाशक

मकतबः पयामे अम्न

नदवा रोड,डालीगंज, लखनऊ-20 (यू०पी०) इण्डिया



© सर्वाधिकार सुरक्षित



| | |
|---|---|
| नाम- | रसूलुल्लाह (सल्ल०) की पाकीज़ह़ ज़िन्दग़ी |
| लेखक- | मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी |
| प्रकाशक- | मकतबः पयामे अम्न,<br>नदवा रोड, डालीगंज, लखनऊ-20 (यू०पी०) इण्डिया |
| संस्करण हिन्दी- | छठा |
| पुस्तक संख्या- | 5000 |
| वर्ष- | 2019 |
| मूल्य- | 30 रु० |

**Writer** Mufti Mohd Sarwar Farooqui Nadwi (Aacharya)

**Publisher:** Maktaba Payam-e-Amn

Nadwa Road, Daliganj, Lucknow (U.P.) India

**Website:** www.islamicjpamn.com

**Mobile–** 0091– 9919042879, 9984490150

**E–Mail:** maktaba.pyameamnlko@gmail.com


## मिलने के पते

1. मजलिसे तह़क़ीक़ात, नदवतुल उलमा (लखनऊ)
2. सत्य सन्देश फ़ाउन्डेशन 182-A 5 ग्रीन लैण्ड कैम्पस, पोखरपुर, जाजमऊ कानपुर- 9935044343
3. जामिया दारे अरक़म मुह़म्मदपुर गौंती, फ़तेह़पुर
4. न्यू सिल्वर बुक एजेन्सी, 14, मुह़म्मद अ़ली बिल्डिंग भिंडी बाज़ार, मुम्बई. 400003
5. मुहम्मद असलम काज़मी, मुह़ल्ला दीवान, निकट तय्यिब मस्जिद देवबन्द- 9760849186
6. मकतबः अल् फ़ुरक़ान, नज़ीराबाद (लखनऊ)
7. आसिफ़ किताब घर, मीना मार्केट जामा मस्जिद रोड, शाह मारूफ़ गोरखपुर, यू०पी०-9415857727
8. सुब्ह़ानिया बुक डिपो, नया मुह़ल्ला, जबलपुर मध्य प्रदेश- 9424708020

# विषय सूची

विषय पृष्ठ सं०

भाग एक


सन्देश.................................................................... 6
भूमिका.................................................................... 8
हुज़ूर (सल्ल०) की पाकीज़ह ज़िन्दगी.................................. 10
हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का ख़ानदान................................ 10
आप (सल्ल०) की पैदाईश................................................ 10
आप (सल्ल०) के दूध पीने का ज़माना............................... 11
आप (सल्ल०) के रज़ाई (दूध शरीक) भाई बहन.................. 12
बीबी आमिना और अ़ब्दुल मुत्तलिब की परवरिश में............. 12
चचा अबूतालिब की परवरिश और शाम का सफ़र................ 13
हरबुलफ़ुजार में भाग....................................................... 13
हलफ़ुल फ़ुजूल................................................................ 13
कअ़बः की तामीर............................................................ 14
आप (सल्ल०) की तिजारत................................................ 14
आप (सल्ल०) के चचा और फूफ़ियाँ.................................. 15
आप (सल्ल०) की फूफ़ियाँ................................................ 15
आप (सल्ल०) का निकाह.................................................. 15
आप (सल्ल०) की बीवियाँ................................................ 16
आप (सल्ल०) के बेटे....................................................... 16
आप (सल्ल०) की बेटियाँ और उनका निकाह़.......................... 17
आप (सल्ल०) के नवासे और नवासियाँ................................ 17
आफ़ताबे रिसालत........................................................... 17
नुबूवत का ताज.............................................................. 18
ग़ारे हिरा से अपने घर तक.............................................. 18




विषय पृष्ठ सं०


शुरु में इस्लाम क़ुबूल करने वाले........................................ 19
पहला एलान-ए-ह़क़ कोहे सफ़ा से..................................... 19
ज़ुल्म के पहाड़................................................................ 20
मुसलमानों की ह़ब्शा की ओर हिजरत................................. 21
क़ुरैश का पीछा.............................................................. 21
क़ुरैश की ओर बनी हाशिम का बाईकाट............................. 22
मुहासरा (क़ैद)................................................................ 22
अबू तालिब और ह़ज़रत ख़दीजा का इन्तिक़ाल...................... 23
ताइफ़ की ओर हिजरत..................................................... 23
मेराज का वाक़िया........................................................... 23
नमाज़ की फ़र्ज़ीयत.......................................................... 24
मदीना मुनव्वरह में इस्लाम............................................... 24
बैत, उक़्ब-ए-ऊला.......................................................... 24
बैत उक़्ब-ए-सानिया....................................................... 25
मदीने की तरफ़ हिजरत.................................................... 25
हुज़ूर (सल्ल०) का हिजरत का हुक्म .................................. 25
ग़ारे सौर का क़याम......................................................... 26
मदीना में आप (सल्ल०) का इन्तिज़ार.................................. 26
मस्जिदे क़ुबा और मदीने का पहला जुमअ़ः............................. 27
मस्जिदे नबवी की तामीर.................................................. 27
यहूदियों से मुआ़हिदा....................................................... 27
अज़ान का हुक्म.............................................................. 28
इस्लामी तारीख़ की शुरुआ़त.............................................. 28
क़िब्ले की तब्दीली का हुक्म.............................................. 28
हुज़ूर (सल्ल०) के ग़ज़वात व सराए...................................... 28
सुलेह़ हुदैबिया और बैते रिज़वान........................................ 32
हुज़ूर (सल्ल०) का दावती ख़त बादशाहों के नाम..................... 33

विषय पृष्ठ सं०

उमर-ए-क़ज़ा........................................................................ 34
फ़तेह़ मक्का........................................................................ 34
तमाम जमाअ़तों का इस्लाम कु़बूल करना................................... 35
आप (सल्ल०) का आख़िरी ह़ज................................................ 35
अरफ़ा का आख़िरी ख़ुत्बः...................................................... 36
ह़ज के बाद मदीना में सरिया उमामा......................................... 37
आप (सल्ल०) की बीमारी....................................................... 38
ह़ज़रत अबूबक्र सिद्दीक़(रज़ि०) की इमामत.................................. 38
आप (सल्ल०) का आख़िरी ख़ुत्बः............................................. 39
आप (सल्ल०) के आख़िरी कलिमात........................................... 40
आप (सल्ल०) की तजहीज़ व तकफ़ीन.........................................40
आप (सल्ल०) की क़ब्र मुबारक................................................. 41

## भाग दो

हर चीज़ से ज़्यादा अल्लाह रसूल (सल्ल०) और दीन की मुह़ब्बत...... 42
दीन की ख़िदमत व दअ़वत....................................................... 44
दीन पर इस्तिक़ामत................................................................. 49
दीन की कोशिश और नुस्रत व हिमायत.................................... 52
शहादत की फ़ज़ीलत और शहीदों का मर्तबा............................... 55
आप (सल्ल०) की क़ब्र मुबारक................................................. 41

# संदेश

***बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम***

*“अल्ह़म्दुलिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन वस्सलातु वस्सलामु अ़ला सय्यिदिल मुर्सलीन व अ़ला आलिहि वअस्ह़ाबिही अजमईन। वमन तबे अहुम बिएहसानि इलायौमिद्दीन।”*

यह एक ऐसी ह़क़ीक़त है जिसका इन्कार कोई मुसलमान नहीं कर सकता। कि जनाबे रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ज़ाते गिरामी सबसे ज़्यादा अ़ज़ीम, सबसे ज़्यादा दिल आवेज़ और मह़बूब आँखों की ठंडक, दिल का सुकून, अ़ज़्मतों की अ़लामत और अवसाफ़े ह़मीदा का मजमूआ़ है। आपका नमून-ए-ज़िन्दगी उंसव-ए-ह़सना और इत्तिबा व तक़लीद के लायक़ है। आपकी ह़याते तय्यिबा पर कुछ लिखना ख़ुशबख़्ती व सआ़दत, और आप (सल्ल०) की ज़िन्दगी के किसी पहलू की ख़ुश्बू अपनी ज़िन्दगी में बसाना नजात व कामियाबी का ज़रिया है। अल्लाह तआ़ला ने इन्सानियत की रहनुमाई व क़यादत और आ़लम की फ़लाह व कामरानी के लिए आप को इस दुनिया में भेजा, और किताब व ह़िकमत की तालीम और नुफ़ूस का तज़किया आप (सल्ल०) की ज़िम्मेदारी क़रार दी, जिसे आप ने बहुस्ने ख़ूबी अंजाम दिया। इस तरह इंसानियत की मुरझाई हुई खेती लहलहा दी, और इन्सानी ज़िन्दगी सरसब्ज़ व शादाब हो गई।

**बहार आज जो दुनिया में आयी हुई है।**
**यह सब पौध उन्हीं की लगाई हुई है।**

ऐसे ख़ुशनसीबों की फ़ेहरिस्त बहुत तवील है जिन्होंने तस्नीफ़ व तालीफ़ के गुलहाए अक़ीदत बारगाहे नबवी में पेश किए। नज़्म हो या नस्र, मुख़्तलिफ़ गुलदस्ते क़तार में लगे हैं कि बारयाब होकर शर्फ़ हुज़ूरी से सरफ़राज़ हों, इन्हीं में हमारे बिरदार अ़ज़ीज़ व मुकर्रम **‘मौलवी मुह़म्मद सरवर फ़ारुक़ी नदवी साह़ब’** भी हैं जिन्होंने एक मुख़्तसर रिसाला आप (सल्ल०) की ह़याते तय्यिबा के मुख़्तलिफ़ गोशों को जमा करके तर्तीब दिया है ताकि इस मशग़ूलियत के दौर में भी मशग़ूल इंसान इस इतर से अपने आपको मुअत्तर कर सके क्योंकि यही एक दर है जिससे दुखी इंसानियत सुकून और नजात पा सकती है।



ऐसी मुख़्तसर किताब की हिन्दी में शदीद ज़रुरत थी क्योंकि हिन्दी का दामन अभी तक ऐसी बामक़सद व नाफ़ेअ़ किताबों से खाली है, जो हिन्दी दाँ ह़ज़रात के लिए रहनुमाई का काम करे।

अल्लाह तआ़ला इस किताब को नाफ़ेअ़ बनाए और पढ़ने वालों को मुकम्मल इस्तिफ़ादः की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

**अ़ब्दुल्लाह ह़सनी नदवी** (रह़०)
उस्तादे ह़दीस, नदवतुल उलमा, लखनऊ
1 जुलाई 1997 ई०

# भूमिका

*बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम*

**अल्लाह तआला फ़रमाता है:-**

"और ऐ मुहम्मद! हमने तुमको तमाम जहान के लिए रहमत बनाकर भेजा है।"

इसमें कोई शक नहीं! कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) की पाकीज़ह ज़िन्दगी तमाम दुनिया-ए-इंसानियत के लिए रहम का मज़हर बनकर आई थी जिसने जुल्म व सितम के उठते हुए तूफ़ान को रहमत के मानसून में तब्दील कर दिया था, आप (सल्ल०) ने न सिर्फ़ मुसलमानों के लिए ही रहमत बने बल्कि तमाम मख़्लूक़ के लिए आपके ज़िन्दगी का हर शोबा गवाही देता है कि इतना जामेअ़ निज़ामे ज़िन्दगी आज तक किसी ने दिया है और न दे पायेगा, इसलिए कि आपकी तर्बियत बराहेरास्त अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से हो रही थी जो क़ियामत तक की तमाम ईजादात और साइंस व टेक्नॉलोजी से वाक़िफ़ है। उसने आप (सल्ल०) पर नुबूवत को ख़त्म फ़रमाने का इरादा किया तो आप (सल्ल०) की रहनुमाई हर मैदान में की, इसलिए अब क़ियामत तक के तमाम इंसानों की रहनुमाई का वाहिद एक ही मरकज़ होगा वह है रहमतुल्लिलआ़लमीन हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की पाकीज़ह ज़िन्दगी-अ़िबादात हो, या मामलात हो, मुआ़शरत हो, या सियासी बसीरत हो जंगी महाज़ हो या घरेलू ज़िन्दगी हो हर जगह आप (सल्ल०) की ज़ाते गिरामी में मुकम्मल रहनुमाई मिलेगी जिसे अल्लाह तआ़ला ने अपने बंदों के ज़रिए अपने महबूब की हर अदाओं को महफ़ूज़ करवा दिया जो आप (सल्ल०) का एक मोजज़ः है।

आजकल चूँकि हमारे स्कूलों में हिन्दी का ज़्यादा रिवाज़ हो गया है इसलिए वहाँ से निकलने वाले लड़के और लड़कियाँ इस क़ाबिल नहीं रहते कि वह उर्दू की किताबें पढ़ सकें लेकिन मुसलमान घरानों में चूंकि उर्दू आमतौर पर बोली जाती है इसलिए लोग उर्दू ज़बान तो समझते हैं लेकिन पढ़ नहीं पाते।



इसलिए ऐसे लोगों के लिए मैंने इस किताब की ज़बान उर्दू रखी है ताकि समझने में आसानी हो और हुज़ूर (सल्ल०) से सच्ची मुहब्बत पैदा हो।

## एक नज़र किताब के पन्नों पर

इस किताब में हुज़ूर (सल्ल०) की पाकीज़ह ज़िन्दगी-ख़ानदान और पैदाइश से लेकर आप (सल्ल०) की घरेलू व दअ़वती ज़िन्दगी और मदीने की हिजरत के साथ तमाम ग़ज़वात और आप (सल्ल०) की अजवाज़े मुतहहरात, साहबज़ादों तक का तमाम मुस्तनद किताबों से तज़किरा किया गया है। जिसके पढ़ने से सुन्नतों पर चलना आसान हो जाएगा।

आख़ीर में हम जनाब तारिक़ साहब के शुक्रगुज़ार हैं, जिन्होंने इस के छपवाने में तआवुन फ़रमाया। अल्लाह पाक अपनी शान के अनुसार अज्र अ़ज़ीम अ़ता फ़रमा कर सुन्नतों पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए।

**मुहम्मद सरवर फ़ारुक़ी नदवी**
**नदवा (लखनऊ)**
**2 जुलाई 1997**

# हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की पाकीज़ह ज़िन्दगी

## हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) का ख़ानदान

आप (सल्ल०) से पहले शहर मक्का को हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने आबाद किया था और हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) से पहले मक्का के चारों ओर "क़बील-ए-जर्हुम" आबाद थे। इसी ख़ानदान में हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने अपने बेटे हज़रत इस्माईल (अ़लै०) की शादी की, जिनके बारह बेटे हुए, इन्हीं की वंश में केदार की औलाद हिजाज़ में आबाद हुई जिनमें "अदनान" हुए और इन्हीं से हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हैं। आप (सल्ल०) के दादा के दस बेटे थे जिसमें आप (सल्ल०) के वालिद का नाम अ़ब्दुल्लाह था उनकी शादी बनी जुहरा के सरदार 'वहब' की लड़की आमिना से आप (सल्ल०) के दादा ने की थी जो उस वक़्त की बहुत मोहतरम ख़ातून थीं।[१]

## आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की पैदाइश

आप की पैदाईश मशहूर क़ौल के मुताबिक़ १२ रबीउलअव्वल[२] आमुल फ़ील

१. इब्निहिशाम

२. (i) फ़लकियात के माहिर मिस्री आ़लिम महमूद बाशा के मुताबिक़ नौ रबीउलअव्वल रोज़ दोशम्बा मुताबिक़ २० अप्रैल ५७१ ई० में हुई।

(ii) बुख़ारी शरीफ़ में है कि मुहम्मद (सल्ल०) के बेटे इब्राहीम के इन्तिक़ाल के वक़्त ग्रहण लगा था तो वह १० हि० थी।

(iii) रियाज़ी क़ाआदे के मुताबिक़ १० हि० का ग्रहण ७ जनवरी ५३२ ई० को ८ बज कर ३० मिनट पर लगा था।

(iv) इस हिसाब से अगर ६३ साल पीछे चलें तो आप (सल्ल०) की पैदाईश का साल ५७१ ई० है इस हिसाब से रबीउलअव्वल की पहली तारीख़ १२ अप्रैल ५७१ ई० को होगी।

(v) इस इख़्तिलाफ़ के बावजूद कि रबीउलअव्वल का महीना और दिन दोशम्बा और तारीख़ ८ से १२ तक है।

(vi) इन सबसे पता चलता है कि दोशम्बा का दिन नवीं तारीख़ ही को पड़ता है इस तरह २० अप्रैल ५७१ ई० साबित हो जाती है। **(सीरतुन्नबी)**



(मुताबिक़ ५७० ई० दोशम्बा) के दिन हुई। तो आपकी वालदह ने आप (सल्ल०) के दादा को ख़बर किया तो वह आकर आप (सल्ल०) को कअ़बः के अन्दर ले गये और अल्लाह तआ़ला की हम्द बयान की और दुआ़[१] की और आप (सल्ल०) का नाम "मुहम्मद" (सल्ल०) रखा।

यह नाम बिल्कुल नया था इसलिए अ़रबों को इस पर बहुत तअ़ज्जुब हुआ।[२]

## आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के दूध पीने का ज़माना

सबसे पहले आप (सल्ल०) को आप (सल्ल०) की वाल्दह ने दूध पिलाया और तीन रोज़ बाद "सौबिया" ने (जो अबूलहब की लौंडी थी)[३] "सौबिया" के बाद हज़रत हलीमा सअ़दिया ने आप (सल्ल०) को दूध पिलाया जो क़बीले हवाज़िन की थीं साल में दो बार मक्का लाकर आप (सल्ल०) को आप की माँ से मिला जाती थीं अ़रब के लोग दूध पिलाने के लिए इसलिए भेजते थे ताकि जंगल की खुली हवा में रहकर तन्दुरुस्त हो जाएँ।

आप (सल्ल०) जब दो वर्ष के हुए तो दाई हलीमा ने आप (सल्ल०) का दूध छुड़वा दिया और हुज़ूर (सल्ल०) को आप (सल्ल०) की वाल्दह के पास ले आई और कहा कि कुछ दिनों तक हमारे यहाँ और रहने दें, तो आप (सल्ल०) की वाल्दह ने वापस दाई हलीमा के साथ भेज दिया-[४]।

वापसी के बाद जब आप (सल्ल०) बनी सअ़द में थे, तो एक रोज़ दो फ़रिश्ते आए और आप (सल्ल०) का सीना मुबारक चीर कर आप (सल्ल०) के गोश्त के टुकड़े या लोथड़े की तरह एक काली चीज़ निकाल कर फेंक दी। और आप (सल्ल०) के दिल को ख़ूब अच्छी तरह धोया और साफ़ कर के अपनी जगह वापस कर दिया और वह उसी तरह हो गया जैसे पहले था[५]।

१. सीरत इब्निहिशाम भाग एक १५६-१६०

२. इब्नेकसीर भाग एक २१० व इब्नेहिशाम १५८

३. बुख़ारी बाब युहरमु मिमर्रिज़ा

४. सीरत इब्नहिशाम-रिजाअ़त के बाब में

५. इमाममुस्लिम ने किताबुलईमान "बाबुलइसराविरसूलिल्लाह" में दिया है।

## आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के रज़ाई (दूधशरीक) भाई बहन

हज़रत हलीमा के शौहर का नाम "हारिस" था। जो आप (सल्ल०) के रज़ाई भाई के बाप थे जिन्होंने बाद में इस्लाम कुबूल कर लिया था और आप (सल्ल०) के चार रज़ाई भाई-बहन थे। (१) अ़ब्दुल्लाह (२) अनीसा (३) हुज़ैफ़ा (४) हुज़ाफ़ा जो शीमा के नाम से मशहूर थी।[१]

## बीबी आमिना और दादा अ़ब्दुल मुत्तलिब की परवरिश में

दाई हलीमा ने हुज़ूर (सल्ल०) को ६ साल[२] पर आप (सल्ल०) की वाल्दह के परवरिश में दे दीं तो आप (सल्ल०) की वालिदह ने आप (सल्ल०) को आप के दादा का ननिहाल जो नज्जार ख़ानदान मदीना में था, दिखाने के लिए मदीना ले गईं (इस सफ़र में उम्मे ऐमन (रज़ि०) भी साथ थीं जो आप (सल्ल०) की दायीं थीं) और अपने मह़बूब (शौहर) अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब की क़ब्र पर भी जाना चाहती थीं[३] इस तरह आप ने एक माह तक मदीना में क़्याम किया और फिर वापसी में जब "अबवा" के स्थान पर पहुँची तो वहीं उनका इन्तिक़ाल हो गया और वहीं दफ़न की गईं और उम्मे ऐमन (रज़ि०) आप (सल्ल०) को लेकर मक्का आईं और अब आप (सल्ल०) के वालिदा के इन्तिक़ाल के बाद आप (सल्ल०) के परवरिश की मुकम्मल ज़िम्मेदारी आप (सल्ल०) के दादा अ़ब्दुल मुत्तलिब पर आ गयी।

जब आप (सल्ल०) की उमर मुबारक आठ साल की हुई तो अ़ब्दुलमुत्तलिब[४] का भी इन्तिक़ाल हो गया और एक बार फिर यतीमी का ज़ाइक़ा चखना पड़ा।

---

१. तबक़ातइब्निसअ़द (भाग एक)
२. इब्निइस्हाक़ का क़ौल है।
३. सीरतुन्नबी
४. सीरत इब्निहिशाम भाग एक पेज नं० १६८-१६६२



## चचा अबूतालिब की परवरिश और शाम का सफ़र

आप (सल्ल०) के दादा के बाद, आप (सल्ल०) की परवरिश आप (सल्ल०) के सगे चचा अबूतालिब ने की। जब आप (सल्ल०) की उमर ६ वर्ष की हुई तो आप (सल्ल०) अपने चचा अबूतालिब के साथ तिजारती सफ़र में शामिल होकर शाम की तरफ़ निकले, रास्ते में **"बुसरा"** नामी स्थान पर एक **"बुहैरानामी"** राहिब से मुलाक़ात हुई तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) को देखकर पहचान गये कि आप ही आख़िरी रसूल हैं इसलिए अबूतालिब ने कहा कि इन्हें अपने वतन ले जाओ और यहूदियों से इनकी ह़िफ़ाज़त करो। तो अबू तालिब ने फ़ौरन आप (सल्ल०) को मक्का वापस कर दिया[१]।

## ह़रबुलफ़ुजार में भाग

जब आप (सल्ल०) की उम्र चौदह-पन्द्रह साल की थी तो क़ुरैश और क़ाबिल-ए-क़ैस के दर्मियान जंग हुई जिसमें आप (सल्ल०) ने पूरी तरह भाग लिया[२]।

इसको फ़ुजार इसलिये कहा जाता है कि यह लड़ाई उस समय हुई जिन महीनों में लड़ना मना था।

जब आप (सल्ल०) की उम्र आगे बढ़ी तो 'रोज़ी मआ़श' के लिए बकरियाँ चराने का पेशा अपनाया। एक बार आप (सल्ल०) ने फ़रमाया था कि कोई नबी ऐसा नहीं गुज़रा जिसने बकरियाँ न चराई हों।

## ह़लफ़ुल फ़ुज़ूल

**"ह़ल्फ़ुल फ़ुज़ूल"** इसलिए कहते हैं कि सबसे पहले इस मुआ़हिदे का ख़याल जिन लोगों को आया उनके नाम में लफ़्ज़ "फ़ज़ीलत का माद्दा था।[३] लड़ाईयों की वजह से सैकड़ों घराने बर्बाद हो चुके थे। इसलिए सुधार की उम्मीद से आप के चचा ज़ुबैर

---

१. सीरत इब्निहिशाम भाग एक पेज नं० १८०
२. सीरत इब्नि हिशाम
३. बाज़ लोगों ने दूसरी भी वजह बताई।

बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब ने हाशिम, ज़ुहरा और तैम के लोगों को अ़ब्दुल्लाह बिन जुद्आ़न के घर पर जमा किया इसमें यह मुआ़हिदा हुआ कि हममें से हर शख़्स मज़लूम की मदद करेगा। और कोई ज़ालिम मक्का में न रहने पायेगा[1]। आप (सल्ल०) भी इस मुआ़हिदे में शरीक थे, और यह मुआ़हिदा ख़ास तौर पर इस पर हुआ था कि ज़ुबैद का एक व्यक्ति मक्का में कुछ सामाने तिजारत के लिए लाया, जिसे कुरैश के एक सरदार **"आस बिन वायल"** ने ख़रीद लिया लेकिन उस का ह़क़ उसे नहीं दिया तो ज़ुबैदी ने कुरैश के सरदारों से मदद चाही लेकिन "आसबिन वाएल" चूंकि ऊँचे परिवार का था इसलिए किसी की हिम्मत न हुई परन्तु कुछ लोगों को ग़ैरत आई और यह मुआ़हिदा किया[2]।

## कअ़बः की तामीर

कअ़बः की इमारत न ज़्यादह ऊँची थी और न छत थी अब उसको नये सिरे से तामीर करना था जब दीवारें ऊँची हो गईं, और हज्रे अस्वद रखने का समय आया तो आपस में लोग झगड़ने लगे इस तरह चार दिन तक झगड़ा चलता रहा, पाँचवें दिन अबूउमैय्या बिन मुग़ीरा ने, जो सब से ज़्यादा बूढ़ा था, राय दी कि कल सुबह़ जो सबसे पहले आएगा वही इस पत्थर को रखेगा। इस राय को सबने मान लिया और दूसरे दिन सबसे पहले हाज़िर होने वालों में रह़मतुल्लिल्आ़लमीन ही थे इस पर सब ख़ुश हुए लेकिन आप (सल्ल०) ने कहा हर-हर कबीले का एक-एक सरदार चुन लिया जाए फिर आप (सल्ल०) ने एक चादर बिछाकर हज्रे अस्वद को उसमें रख दिया और सरदारों से कहा- "चारों कोने थाम लें" और जब रखने की जगह हुई तो आप (सल्ल०) ने उठा कर रख दिया[3]। इस प्रकार आप (सल्ल०) ने बहुत बड़े झगड़े से पूरी क़ौम को बचा लिया।

## आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की तिजारत

आप (सल्ल०) का यह ख़ानदानी पेशा था। आप (सल्ल०) हमेशा अपना मामला

१. तबक़ात भाग एक पेज नं० ८२
२. सीरत इब्निहिशाम भाग एक पेज नं० १६२
३. मुस्तदरक हाकिम भाग एक पेज नं० ४५८



साफ़ रखते थे। तिजारत की ग़रज़ से आप (सल्ल०) शाम बसरा और यमन सफ़र करते थे।

## आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के चचा और फूफ़ियाँ

आप (सल्ल०) के दादा अ़ब्दुल मुत्तलिब के दस बेटे थे।

**१. ह़ारिस २. ज़ुबैर ३. ह़ज़ल ४. ज़िरार ५. मक़ूम ६. अबूलहब ७. अ़ब्बास ८. ह़मज़ह ६. अबूतालिब १०. अ़ब्दुल्लाह।**

जिसमें अ़ब्दुल्लाह आप (सल्ल०) के वालिद थे, बाक़ी नौ आप (सल्ल०) के चचा थे।

## आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की फूफ़ियाँ

आप (सल्ल०) की फूफ़ियां छः थीं।

**१. अमीमः २. उम्मे ह़कीम ३. बर्रह ४. आतिफ़ा ५. सफ़िया ६. अरवी**

## आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) का निकाह़

ह़ज़रत ख़दीजा एक इ़ज़्ज़तदार ख़ातून थीं, इनका नसब हुज़ूर (सल्ल०) से पाँचवीं पुश्त में मिल जाता है इस रिश्ता के अनुसार आप (सल्ल०) की चचेरी बहन थीं जिनकी दो शादियाँ पहले हो चुकी थीं अब वह बेवा थीं और तिजारत किया करती थीं।

एक बार आप (सल्ल०) भी ह़ज़रत ख़दीजा (रज़ि०) का तिजारती माल लेकर उनके ग़ुलाम "मैसरा" के साथ शाम जा रहे थे कि रास्ते में "बस्तूरा" राहिब के पास से गुज़रे तो उसने तुरन्त आप (सल्ल०) को पहचान लिया कि यही आख़िरी रसूल हैं जिनके विषय में उनकी किताबों में भविष्यवाणी मौजूद है तो उन्होंने मैसरा से पूरी बाते बताईं कि यही आख़िरी नबी है। आप (सल्ल०) ने दयानतदारी से तिजारत भी की, इन सबसे प्रभावित होकर ह़ज़रत ख़दीजा ने तीन माह बाद आप (सल्ल०) को आप के चचा ह़ज़रत ह़म्ज़ा के ज़रिए निकाह़ का पैग़ाम भिजवाया, तो आप (सल्ल०)

ने क़ुबूल फ़रमा लिया और निकाह़ का खुत्बः अबूतालिब ने पढ़ाया[१] इस शादी के समय आप (सल्ल०) की उम्र पच्चीस साल और ह़ज़रत ख़दीजा की उम्र चालीस साल की थी[२]। आप (सल्ल०) के सहाबज़ादे ह़ज़रत इब्राहीम के अ़लावाह आप (सल्ल०) की सारी औलादें इन्हीं से हुईं[३]।

## आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की बीवियाँ

सबसे पहला निकाह़ आप (सल्ल०) ने पच्चीस साल की उम्र में ह़ज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से किया, जिनकी उम्र चालीस साल की थी। इससे पहले ह़ज़रत ख़दीजा की दो शादियाँ हो चुकीं थीं।

दूसरा निकाह़ ह़ज़रत सौदाबिन्ते जमअ़ः रज़ियल्लाहु अ़न्हा से उस समय किया जबकि आप (सल्ल०) की उम्र पचास साल से अधिक हो चुकी थी उनके बाद ह़ज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से ५४ वर्ष की आयु में निकाह़ किया जबकि ह़ज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की उम्र उस वक़्त ६ वर्ष की थी। चौथा निकाह़ ह़ज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से पचपन वर्ष की आयु में हुआ और पाँचवा निकाह़ ह़ज़रत ज़ैनब बिन्ते खुज़ैमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से पचपन वर्ष की आयु में और छठा निकाह़ ह़ज़रत उम्मे सल्मा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से छप्पन वर्ष की आयु में और सातवाँ निकाह़ ह़ज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश रज़ियल्लाहु अ़न्हा से ५७ वर्ष की आयु में और आठवाँ निकाह़ ह़ज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से और नवाँ निकाह़ ह़ज़रत जुवैरिया रज़ियल्लाहु अ़न्हा से और दसवाँ निकाह़ ह़ज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अ़न्हा से उन्सठ वर्ष की आयु में और ग्याहरवाँ निकाह़ ह़ज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अ़न्हा से हुआ।

इस प्रकार ह़ज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के अतिरिक्त सभी बेवा या तलाक़शुदा औ़रतें थीं।

## आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के बेटे

आप (सल्ल०) के तीन बेटे हुएः-

१. **क़ासिम-** जिनका इन्तिक़ाल दो वर्ष बाद हो गया था।

१. सीरत इब्निहिशाम भाग एक १८७-१६० व सीरत इब्नेकसीर २६५
२. सीरत इब्निहिशाम भाग एक १८६
३. सीरत इब्निहिशाम भाग एक १६०



२. **अ़ब्दुल्लाह-** जिनका मक्का ही में बचपन में इन्तिक़ाल हो गया था।

३. **इब्राहीम-** यह 'मारियाक़िब्तिया' से पैदा हुए जिनका इन्तिक़ाल अठ्ठारह माह बाद हुआ इन्हीं को तय्यब और ताहिर भी कहा जाता है।

## आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की बेटियाँ और उनका निकाह़

आप (सल्ल०) की चार बेटियाँ हुईः-

१. **सय्यदह ज़ैनब (रज़ि०),** जिनका निकाह़ अबुलआ़स (रज़ि०) बिन रबीआ़ से हुआ।

२. **सय्यदह रुकइया (रज़ि०),** जिनका निकाह़ ह़ज़रत उ़स्माने ग़नी (रज़ि०) से हुआ।

३. **सय्यदह उम्मेकुल्सूम (रज़ि०),** जिनका निकाह़ ह़ज़रत उ़स्माने ग़नी (रज़ि०) से सय्यदह रुकइया (रज़ि०) के इन्तिक़ाल के बाद हुआ।

४. **सय्यदह फ़ातिमा (रज़ि०),** जिनका निकाह़ ह़ज़रत अ़ली (रज़ि०) से हुआ।

## आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के नवासे और नवासियाँ

आप (सल्ल०) के पाँच नवासे और नवासियाँ हुईं।

१. ह़ज़रत अ़ली (रज़ि०)
२. ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि०)
३. ह़ज़रत ह़सन (रज़ि०)
४. ह़ज़रत हुसैन (रज़ि०)
५. ह़ज़रत उ़मामा (रज़ि०)
६. ह़ज़रत उम्मे कुल्सूम (रज़ि०)
७. ह़ज़रत ज़ैनब (रज़ि०)

## आफ़ताबे रिसालत

जब आप (सल्ल०) की उम्र चालीस वर्ष की हुई तो उस समय दुनिया ज़ुल्म व सितम और बुतपरस्ती के अँगारों में झुलस रही थी जिस पर आप (सल्ल०) ने

रहमत की चादर डाल दी।

आप (सल्ल०) के नुबूवत से पहले मक्का के तीन मील की दूरी पर एक ग़ार है "ग़ारे हिरा" जहाँ आप (सल्ल०) कई-कई दिन और कई-कई रात गुज़ार देते और आप (सल्ल०) इब्राहीमी तरीक़े के साथ फ़ितरते सलीम की रहनुमाई से अल्लाह तआला की अिबादत करते[१]।

## नुबूवत का ताज

आप (सल्ल०) अपनी पैदाईश के इकतालीसवें साल ग़ारे हिरा में १७ रमज़ान[२] यानी ६ अगस्त ६१० ई० को बैठे हुए थे कि एक फ़रिश्ता आया और कहा कि पढ़िए आपने जवाब दिया कि मैं पढ़ा हुआ नहीं हूँ।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) फ़रमाते हैं कि उसके बाद उसने मुझे दबाया यहाँ तक कि मैंने उसकी तकलीफ़ महसूस की, फिर मुझे छोड़ दिया और कहा पढ़िए मैंने जवाब दिया कि 'मैं पढ़ा हुआ नहीं हूँ।' उसने मुझे फिर पकड़ा और इतनी ज़ोर से लिपटाया कि मुझ पर इसका सख़्त दबाव पड़ा फिर मुझे छोड़ दिया और कहा पढ़िए मैंने कहा 'मैं पढ़ा हुआ नहीं हूँ' उसने फिर मुझे पकड़ कर दोबारह उसी तरह दबाया और छोड़ दिया और कहा

***"इकरा बिस्मिरब्बिकल्लज़ी..............................मालम यअ़लम*[३]**

**सूरः अलक़ १-५**

यह नुबूवत का पहला दिन और पहली वह्य और कुर्आन का हिस्सा था[४]।

## ग़ारे हिरा से अपने घर तक

आप (सल्ल०) घर वापस तशरीफ़ लाए और हज़रत ख़दीजा से पूरा क़िस्सा सुनाया तो आप (सल्ल०) को हज़रत ख़दीजा वरक़ः बिन नौफ़ल के पास ले गयी, जो तौरेत व इन्जील के माहिर थे, सुनते ही कहा यह वही नामूस है जो हज़रत मूसा

१. बुख़ारी शरीफ़ बाब कैफ़ा काना बदइलवहय...........)
२. इब्निक़सीर, भाग एक ३६२
३. इब्निकसीर, भाग एक २६२
४. सीरतुन्नबी, भाग एक २०३



(अ़लै०) पर उतरा था और एक ज़माना आयेगा कि आप (सल्ल०) की क़ौम आप (सल्ल०) को झुठलाएगी और आपको आप के वतन से निकालेगी और आपसे जंग करेगी इस पर आप (सल्ल०) को बहुत तअ़ज्जुब हुआ, तो वरक़ा बिन नौफ़ल ने कहा अगर मैं ज़िन्दा रहा तो मैं आप का पूरा साथ दूँगा[१]। उसके बाद बहुत दिनों के बाद दोबारह वह्य का सिल्सिला शुरु हुआ।

## शुरु में इस्लाम क़ुबूल करने वाले

सबसे पहले हज़रत ख़दीजा ने इस्लाम क़ुबूल किया जो आपकी बीवी थीं फिर हज़रत अ़ली (रज़ि०) बिन अबूतालिब ने जो आप (सल्ल०) के चचेरे भाई थे फिर ज़ैद बिन हारसा ने (जो आप सल्ल० के गुलाम थे)[२] और हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ बिन अबी कुहाफ़ा ने, और फिर हज़रत अबूबक्र (रज़ि०) की तब्लीग़ से हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) बिन अबी कुहाफ़ा ने, और फिर हज़रत अबूबक्र (रज़ि०) की तब्लीग़ से हज़रत उस्मान (रज़ि०) हज़रत ज़ुबैर (रज़ि०) हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि०) सअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि०) तल्हा बिन ओबैदुल्लाह[३] अबूओबैदह बिन जर्राह अरकम बिन अबी अरकम (रज़ि०) इसके बाद लोगों ने बड़ी तादाद में इस्लाम क़ुबूल किया।

## पहला एलान-ए-हक़ कोहे सफ़ा से

आप (सल्ल०) तीन साल तक छुप-छुप कर तब्लीग़ करते रहे फिर अल्लाह तआला की तरफ़ से एलानिय तब्लीग़ करने का हुक्म आ गया कि जो हुक्म आप को ख़ुदा की तरफ़ से मिला है वह (लोगों) सुना दीजिए और मुश्रिकों का ज़रा भी ख़्याल न कीजिए। **(सूरः हिज्र ६४)**

इस हुक्म के बाद आप (सल्ल०) ने **"कोहे सफ़ा"** की चोटी पर चढ़कर बुलन्द आवाज़ में कहा "या सबाहा" (यह नारा जब किसी दुश्मन का ख़तूरा होता था तब लगाया जाता था) यह नारा सुनते ही क़ुरैश के सभी क़बीले जमा हो गये तो आप

१. बुख़ारी शरीफ़-बाब कैफ़ा कान बदअल वह्य व सीरत इब्निहिशाम २३८
२. सीरत इब्निहिशाम २४५ से २४७ तक।
३. सीरत इब्निहिशाम २४६ से २५० तक।

(सल्ल०) ने इस्लाम की दावत दी लेकिन अबू लहब ने कहा, 'सारे दिन तुम्हारे लिए ख़राबी हो क्या इसी लिए जमा किया था'?[१]

फिर आपने चन्द दिन के बाद खाने की दावत की और खाने के बाद आप (सल्ल०) ने खड़े होकर फ़रमाया मैं वह चीज़ ले कर आया हूँ जो दीन और दुनिया दोनों के लिए है इसमें कौन मेरा साथ देगा, तो ह़ज़रत अ़ली ने उठकर कहा, 'मैं आपका साथ दूँगा'।[२]

जब इस्लाम क़ुबूल करने वालों की तादाद चालीस से ज़्यादह हो गयी तो आप (सल्ल०) ने कअ़बः में जाकर एलान किया, एलान करते ही लोग टूट पड़े, आप (सल्ल०) के रबीब 'हारिस बिन अबीहाला' ने आप (सल्ल०) को बचाना चाहा लेकिन लोगों ने उन्हें शहीद कर दिया यह सबसे पहला ख़ून था जो अल्लाह के रास्ते में बहा। इसी तरह क़ुरैश-ए-मक्का ने इस्लाम क़ुबूल करने वालों पर ज़ुल्म के पहाड़ तोड़ने शुरु कर दिए।

## ज़ुल्म के पहाड़

ह़ज़रत ख़ब्बाब (रज़ि०) जो उम्मे अम्मार के ग़ुलाम थे जिनको इस्लाम क़ुबूल करने की वजह से, क़ुरैश ने एक दिन ज़मीन पर कोयला जला कर उसी पर ख़ब्वाब (रज़ि०) को चित लिटा दिया, और ऊपर से एक शख़्स ने सीने पर पैर रखकर दबाया कि करवट लेने न पाएँ यहाँ तक कि कोयला पीठ के नीचे ही ठंडा हो गया बहुत दिनों के बाद उन्होंने अपनी पीठ रसूलुल्लाह (सल्ल०) को दिखाई कि यह इस्लाम क़ुबूल करने की वजह से मेरे साथ ऐसा हुआ।

इसी तरह ह़ज़रत बिलाल (रज़ि०) जो उमय्या बिन खलफ़ के ग़ुलाम थे जिन्हें ठीक दोपहर के वक़्त उमय्या जलती हुई रेत के ऊपर लिटा देता और ऊपर से भारी पत्थर सीने पर रख देता और कहता कि इस्लाम से इंकार कर वरना ऐसे ही मार डालेंगे। लेकिन उस वक़्त भी आप कहते 'अहद-अहद' अर्थात अल्लाह एक है एक है और कभी ह़ज़रत बिलाल के गले में रस्सी बाँध कर लड़कों के ह़वाले कर देता और वह उनको शहर के एक ह़िस्से से दूसरे ह़िस्से तक घसीटते फिरते।

इसी तरह ह़ज़रत अम्मार (रज़ि०) यमन के रहने वाले थे उन्होंने जब इस्लाम

१. इब्निकसीर भाग एक पेज नं ४५५
२. तबरी भाग ३ पेज नं (११७१)



क़ुबूल किया तो उन्हें क़ुरैश जलती हुई पथरीली ज़मीन पर लिटाकर इतना मारते कि यह बेहोश हो जाते, लेकिन इस्लाम से नहीं फिरे।

इसी तरह ह़ज़रत 'लबनिया रज़ि०' हैं जिनके इस्लाम लाने की वजह से ह़ज़रत उमर (जब इस्लाम नहीं लाए थे) तो उन्हें इतना मारते थे कि ख़ुद थक कर बैठ जाते लेकिन इस्लाम नहीं छोड़ा।

इसी तरह ह़ज़रत ज़ुबैर (रज़ि०) हैं जिन्हें इस्लाम लाने की वजह से एक बार अबूजेहल ने इतना मारा कि इनकी आँखें चली गयीं लेकिन इस्लाम नहीं छोड़ा।

इसी तरह लोगों को तरह-तरह से सताया जाता लेकिन इनमें से कोई एक भी इस्लाम छोड़ने पर राज़ी न होता।

## मुसलमानों की ह़ब्शा की ओर ह़िजरत

जब आप (सल्ल०) ने देखा कि ज़ुल्म का पैमाना बढ़ता ही जा रहा है तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने ५ नबवी में ह़ब्शा की तरफ़ हिजरत करने का हुक्म दिया 'अहले अ़रब ह़ब्शा' के बादशाह को नज्जाशी कहते थे[१]। इस तरह हुज़ूर (सल्ल०) नुबूवत के बाद की यह सबसे पहली ह़िजरत थी जिसमें ह़ज़रत उ़स्मान बिन मज़ऊन (रज़ि०) को १० आदमियों का अमीर बना कर भेजा। उसके बाद जअ़फ़र बिन अबीतालिब ने ह़िजरत की फिर बहुत से मुसलमान वहाँ पहुँचे जिनके साथ उनके कुछ अहलो अयाल भी साथ थे जिनकी तादाद ८३ बताई गई है[२]।

## क़ुरैश का पीछा

जब मुसलमानों ने हब्शा की तरफ़ ह़िजरत की और क़ुरैशे मक्का को मालूम हुआ कि यह लोग आराम से हैं और नज्जाशी बादशाह ने इन लोगों का इकराम भी किया है तो क़ुरैशे मक्का ने 'अम्रबिन आस' और अ़ब्दुल्लाह बिन रबीअ़ः को नज्जाशी के पास भेजा कि इन्हें वहां से निकलवादें लेकिन नज्जाशी ने कहा हम इनके धर्म और इनके ख़यालात के बारे में पहले जानकारी लेंगे, फिर उसने मुसलमानों से पूछताछ की, 'जाफर बिन अबी तालिब' आगे बढ़े और फ़रमाया।

"हम पहले जाहिलियत वाले थे, बुतों की पूजा करते और मरा हुआ जानवर

१. बुख़ारी बाब अन्नज्जाशी
२. सीरत इब्निहिशाम भाग एक ३२०-३२१

खाते बद्कारी करते और आपस में झगड़ा करते थे यहां तक कि अल्लाह ने हमारी ओर एक रसूल भेजा जो हमारे ही ख़ानदान से है और वह सच्चाई और पाकबाज़ी को ख़ूब जानता है।

उन्होंने बताया कि हम अल्लाह को एक मानें और उसके साथ किसी को साझीदार न बनायें और बुत परस्ती छोड़ दें, सच बोलें, और अपने रिश्तेदारों पड़ोसियों के साथ अच्छा सुलूक करें और ख़ून बहाने, झूठ बोलने, यतीम का माल खाने से मना किया तथा नमाज़, रोज़ः, ज़कात और ह़ज करने का हुक्म दिया तो हम उस पर ईमान लाये।

नज्जाशी ने पूरी तक़रीर सुनकर कहा तुम्हारे रसूल जो कुछ अल्लाह के पास से लाए हैं, मुझे भी सुनाओ। इस पर ह़ज़रत जाफ़र (रज़ि०) ने सूरः मरयम के शुरु की आयतें पढ़ कर सुनाईं, सुनते ही नज्जाशी रो पड़ा और कहा यह और ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) जो कुछ लाए थे एक ही नूर की किरणें हैं इसके बाद तुरन्त दोनों क़ुरैश के क़ासिदों को वापस कर दिया और मुसलमानों का इकराम किया और यह लोग लगभग तीन महीने वहीं रहें फिर वापस आ गये उसके बाद ही ह़ज़रत उ़मर फ़ारूक़ (रज़ि०) ने इस्लाम क़ुबूल किया।

यह सब देखकर क़ुरैश ने तय किया कि यह ऐसे नहीं मानेंगे बनी अ़ब्दुल मुत्तलिब और बनी हाशिम से कहा जाए कि अपने भतीजे को हमारे हवाले करें वरना उनका बाईकाट कर दिया जाएगा।

## क़ुरैश की ओर से बनी हाशिम का बाईकाट

आप (सल्ल०) की नुबूवत के सातवें साल जब बनी अ़ब्दुल मुत्तलिब ने क़ुरैश को मुह़म्मद (सल्ल०) को हवाला करने से इन्कार किया तो आपस में एक फ़ैसला किया कि बनी हाशिम और बनी अ़ब्दुल मुत्तलिब का बिल्कुल बाईकाट किया जाए। उनसे रिश्ते नाते, ख़रीद फ़रोख़्त सब बन्द कर दिया जाए और यह अ़हदनामा लिखकर कअ़बः के अंदर टांग दिया गया।

## मुहासरा (क़ैद)

एक पहाड़ी की घाटी में आप (सल्ल०) और आपके साथी व रिश्तेदारों को



मुक़य्यिद (क़ैद) कर दिया गया, उस वक़्त अबू लहब के अलावाह बनी हाशिम और बनी अ़ब्दुल मुत्तलिब के तमाम लोग चाहे मुस्लिम हों या काफ़िर सब के सब अबू तालिब ही के साथ लगभग तीन साल रहे। जिसमें खाने-पीने का जब सामान ख़त्म हो गया तो भूख से पत्तों को खाने की नौबत आ गयी।

इस पर कुछ इन्सानियत पसंद क़ुरैश के लोगों ने कहा इस मुआ़हिदा को ख़त्म किया जाए यह सुनकर अबू जेहल ने इंकार किया लेकिन उसकी बात नहीं मानी गयी और मुतइम बिन अ़दी ने इस मुआ़हिदे को जा कर देखा तो उसे दीमक खा चुकी थी। जिसे फाड़ कर फेंक दिया और मुहासिरा ख़त्म हो गया।

हुज़ूर (सल्ल०) को वह्य के ज़रिए बता भी दिया गया था कि इस अ़हदनामा को दीमक खा चुकी है।

## अबू तालिब और ह़ज़रत ख़दीजा का इन्तिक़ाल

नुबूवत के दसवें साल आप (सल्ल०) के चचा अबू तालिब का इन्तिक़ाल हुआ फिर उसके तीन दिन बाद ह़ज़रत ख़दीजा का इन्तिक़ाल हो गया इसलिए आप (सल्ल०) ने इस साल को ग़म का साल फ़रमाया[१]।

## ताइफ़ की ओर हिजरत

जब अबू तालिब का इन्तिक़ाल हो गया तो क़ुरैश को खुलकर तकलीफ़ देने का मौक़ा मिल गया इस पर इसी दस नबवी को शव्वाल के आख़िर में ज़ैद बिन हारिसा को साथ लेकर ताइफ़ तशरीफ़ ले गये और ताइफ़ वालों को लगभग एक माह तक दावत देते रहे लेकिन एक भी शख़्स ने इस्लाम क़ुबूल नहीं किया बल्कि अपने शहर से निकलवा दिया और आप (सल्ल०) पर पत्थर चलाए जिससे आप (सल्ल०) के क़दम मुबारक ज़ख़्मी हो गये लेकिन आप ने बद्दुआ़ नहीं दी और मक्का वापस तशरीफ़ ले आए।

## मेराज का वाक़िया

एक दिन आप (सल्ल०) अपनी फूफी ह़ज़रत 'उम्मेहानी' के घर में मेहमान

१. सीरतुन्नबी, भाग एक २४७

थे कि ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) अन्य फ़रिश्तों के साथ आप (सल्ल०) के पास आए और अल्लाह के हुक्म से मस्जिदे ह़राम से मस्जिदे अ़क़्सा ले गये, फिर वहीं आप (सल्ल०) ने तमाम नबियों की इमामत की फिर ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) आप को अ़र्श इलाही पर ले गये जहां आप (सल्ल०) ने अपनी आँखों से जन्नत और जहन्नम भी देखी।

## नमाज़ की फ़र्ज़ियत

मेराज में ही अल्लाह तआ़ला ने आप (सल्ल०) की उम्मत पर पचास वक़्तों की नमाज़ फ़र्ज़ की, आप (सल्ल०) के बराबर कम करवाने पर पांच वक़्त की नमाज़ पढ़ने का हुक्म हुआ और यह कहा गया कि जो ख़ुशी से पढ़ेगा उसे अज्र पचास नमाज़ों का ही मिलेगा[१]।

## मदीना मुनव्वरह में इस्लाम

आप (सल्ल०) ह़ज के मौक़े पर सभी क़बीलों में जा-जाकर इस्लाम की दावत देते, दस नबवी को 'उक़बा' के पास अंसार के क़बीले खज़रज के कुछ लोग थे जिनको आपने इस्लाम की दावत दी तो उन लोगों ने इस्लाम क़ुबूल किया और अपने वतन जाने के बाद अपने भाईयों से भी बतलाया और ख़ूब तब्लीग़ की कि कोई घर ऐसा नहीं बचा जहां बात पहुँच न गयी हो[२]।

## बैत, उक़्ब-ए-ऊला

दूसरे साल ह़ज के मौक़े पर आप (सल्ल०) से मदीने के बारह कुछ लोग मिले और आप (सल्ल०) के हाथ पर बैत की तो हुज़ूर (सल्ल०) ने मुस्अ़ब बिन उमैर (रज़ि०) को इस्लामी तालीम देने के लिए उनके साथ मदीना भेज दिया और वहाँ पहुँच कर ह़ज़रत मुस्अ़ब (रज़ि०) ह़ज़रत अ़स्अद बिन जुरारह के यहाँ ठहरे और इमामत का काम भी अंजाम देते रहे[३]।

१. सही बुख़ारी, किताबुस्सलात
२. सीरत इब्निहिशाम, भाग एक-४२८
३. सीरत इब्निहिशाम, भाग एक- ४३४



## बैत, उक़्ब-ए-सानिया

फिर दूसरे ही साल मुसअ़ब बिन उमैर (रज़ि०) अंसार के कुछ मुसलमानो और मुश्रिकीन की एक जमात के साथ ह़ज करने मक्का पहुँचे और रसूलुल्लाह (सल्ल०) से बैत का वादा किया, जब एक तिहाई रात गुज़र गई तो वह उकबः के पास एक घाटी में इकट्ठा हुए जिनकी तादाद ७३ थी जिनमें २ औ़रतें भी शामिल थीं और आप (सल्ल०) के साथ आपके चचा ह़ज़रत अ़ब्बास (रज़ि०) भी थे वह उस वक़्त तक मुसलमान नहीं हुए थे।

आप (सल्ल०) ने बैत में फ़रमाया कि तुम मेरी ह़िफ़ाज़त वैसी ही करोगे जैसी अपने अहल व अ़याल की करते हो और यह अ़हद लिया कि, बेयार व मदद्गार नहीं छोड़ेंगे और न अपनी क़ौम की तरफ़ वापस हो जाओगे और फ़रमाया मैं तुमसे हूँ और तुम मुझसे हो जिससे तुम जंग करोगे उससे मैं भी जंग करुँगा जिससे तुम सुलह करोगे उससे मैं भी सुलह करुँगा। फिर रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उनमें से १२ सरदारों को चुना जिनमें ९ 'खजरज' के और तीन 'औस' क़बीले के थे[१]।

## मदीने की तरफ़ ह़िजरत

क़ुरैश को जब इस बैत की ख़बर मिली तो और भी ज़्यादह परेशान करने लगे यहाँ तक कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने सह़ाबा को मदीना की तरफ़ ह़िजरत करने का हुक्म दिया और चंद लोगों के अ़लावह सभी मुसलमान ह़िजरत करके मदीना पहुँच गए, हुज़ूर (सल्ल०) ने ह़ज़रत अबू बक्र (रज़ि०) को रोक लिया कि जब मुझे अल्लाह की तरफ़ से हुक्म मिलेगा तब जाऊँगा।

## हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) को ह़िजरत का हुक्म

जब मक्का के काफ़िरों को मालूम हुआ तो आपस में मशवरह हुआ जिसमें अबू जेहल ने राय दी कि मुह़म्मद (सल्ल०) को क़त्ल कर दिया जाए और हर क़बीले से एक- एक आदमी ले लिया जाए ताकि बनी अ़ब्द मनाफ़ बदला न ले सकें। सबने

१. सीरत इब्निहिशाम भाग एक ४४१

यह राय पसंद की और एक रात में यह लोग आप (सल्ल०) का घर घेर कर बैठ गये और इधर रसूलुल्लाह (सल्ल०) को अल्लाह ने ख़बर कर के हिजरत करने का हुक्म दे दिया।

हुक्म मिलते ही रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने हज़रत अ़ली (रज़ि०) को अपने बिस्तर पर लिटाकर[१] आप (सल्ल०) ने हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) को साथ लिया जिनके साथ दो सवारियां और 'अ़ब्दुल्लाह बिन उरैकित' को रहबरी (रास्ता दिखाने) के लिए लेकर मदीना की तरफ़ निकल पड़े और अबूबक्र (रज़ि०) ने अपने बेटे अ़ब्दुल्लाह से कह दिया कि वह मक्का वालों की तरफ़ ख़याल रखेंगे कि वह क्या कर रहे हैं और आमिर बिन फुहैरा को हुक्म दिया कि वह दिन भर उनकी बकरियाँ चराया करें और शाम को उनका दूध पहुँचा दिया करें और आपकी बेटी 'अस्मा' खाना पहुँचा दिया करें।

## ग़ारे सौर का क़याम

जब काफ़िरों को मालूम हुआ कि हुज़ूर (सल्ल०) हिजरत कर गये हैं तो काफ़िरों ने हुज़ूर (सल्ल०) की गिरफ़्तारी पर सौ ऊटनियों का इनाम रख दिया।

आप (सल्ल०) मक्का से निकल कर एक गुफ़ा में जो ग़ारे सौर के नाम से थी उसी में बैठ गये। हुज़ूर (सल्ल०) और हज़रत अबूबक्र (रज़ि०) इस ग़ार में तीन रात लगातार ठहरे रहे।

## मदीना में आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) का इन्तिज़ार

इधर मदीना वालों को ख़बर मिल गयी थी कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) हिजरत कर चुके हैं तो तमाम शहर के लोग इन्तिज़ार में थे लेकिन जिस दिन हुज़ूर (सल्ल०) मदीना पहुँचते हैं लोग इन्तिज़ार करके घर वापस जा चुके होते हैं कि इतने में एक यहूदी आकर ख़बर देता है, तो ख़बर सुनते ही लोगों ने तक्बीर बलन्द की और तमाम अंसार आपकी ख़िदमत में ('कुबा' एक स्थान है जो मदीना से तीन मील की दूरी पर) हाज़िर हो गये।

---

१. सीरत इब्निहिशाम भाग एक- ४८०



## मस्जिदे कुबा ओर मदीने का पहला जुमअः

आप (सल्ल०) ने 'कुबा' में चार दिन या चौदह दिन[१] क़याम किया और वहीं एक मस्जिद की बुनियाद रखी, फिर जुमअ़ के दिन वहाँ से आगे रवाना हुए और बनी सालिम बिन औफ़ के मुहल्ले में जुमअः की नमाज़ अदा की यह जुमअः की पहली नमाज़ थी जिसे आपने मदीने में अदा की। नमाज़ के बाद सवारी पर बैठ गये तो अक्सर अंसारी ख़ुशामद करते कि हमारे यहां क़याम करें लेकिन रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, इस ऊँटनी के हाल पर छोड़ दो, अल्लाह का जहाँ हुक्म होगा वहीं यह बैठ जाएगी इस तरह वह हज़रत अबू अय्यूब अंसारी (रज़ि०) के मकान के सामने बैठ गयी और आप (सल्ल०) ने उन्हीं के यहाँ सात माह क़याम किया।

## मस्जिदे नबवी की तामीर

जिस जगह ऊँटनी बैठी थी उसी जगह को ख़रीद कर मस्जिदे नबवी की तामीर हुई और मस्जिद के साथ दो हुजरे भी बनाए गए एक हज़रत आ़इशा (रज़ि०) के लिए दूसरा हज़रत सौदा (रज़ि०) के लिए चूँकि उस वक़्त तक यही दो बीवियाँ आपके निकाह़ में थीं बाद में और भी हुजरे बने सभी बीवियों के लिए अलग-अलग।

इन मकानात की लम्बाई १० हाथ, और चौड़ाई ६ या सात हाथ थी छत ऐसी थी कि आदमी खड़ा होकर छू लेता और दरवाज़ों पर कम्बल का पर्दा पड़ा रहता था[२]।

## यहूदियों से मुआ़हिदा

हुज़ूर (सल्ल०) ने मुहाजिरीन व अंसार के बीच एक मुआ़हिदा लिखा जिसमें यहूदी से अम्न व अमान का और उनके अपने दीन व धर्म पर रहने और माल व जायदाद की हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी का मुआ़हिदा लिखा और उनके हुक़ूक़ व ज़िम्मेदारी को बताया गया[३]।

---

१. बुख़ारी
२. तबक़ात इब्निसअ़द- भाग ८ पेज नं० ११७
३. सीरत इब्निहिशाम पेज नं० ५.१

## अज़ान का हुक्म

अज़ान के शब्द अल्लाह ने ख़्वाब में कुछ सहाबा को बताया और अज़ान की ज़िम्मेदारी हज़रत बिलाल बिन ख़ब्बाब रवाह के हवाले हुई।

## इस्लामी तारीख़ की शुरुआत

कुबा में आने के बाद हुज़ूर (सल्ल०) के हुक्म से इस्लामी तारीख़ की इब्तिदा हज़रत उमर (रज़ि०) ने की और इसका पहला महीना मुहर्रम को क़रार दिया।

## क़िब्ले की तब्दीली का हुक्म

जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) मदीना आए तो मुश्रिकीन कअ़बः की ओर रुख़ करते थे और अहले किताब बैतुल मुक़द्दस और रसूलुल्लाह (सल्ल०) भी अब तक बैतुल मुक़द्दस की तरफ़, एक साल चार माह तक रुख़ करके नमाज़ पढ़ते रहे लेकिन जब शाबान दो हिज्री को क़िब्ला की तब्दीली का हुक्म हो गया तो आप (सल्ल०) ने नमाज़ की ही हालत में क़िब्ला तब्दील करके कअ़बः को ही हमेशा के लिए क़िब्ला क़रार दिया।

## हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के ग़ज़वात व सराय

जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) और उनके साथी मुसलमान हिजरत करके मदीना पहुँचे तो कुरैश को बहुत चिढ़ हुई और निम्न प्रकार से धमकियाँ देने लगे-

१- कुरैश ने अ़ब्दुल्लाह बिन उबई को ख़त लिखा कि 'मुहम्मद सल्ल०' और उनके साथियों को मदीना से निकाल दो वरना मदीना आकर हम तुमको भी बर्बाद कर देंगे। **(सुनन अबू दाऊद)**

इसी तरह क़र्ज़ बिन जाबिर ने जमादिस्सानी २ हिज्री में मदीना की चारागाह पर हमला किया और हुज़ूर (सल्ल०) के ऊँट लूट ले गये।

इस प्रकार फिर रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने जिहाद व ग़ज़वात का सिलसिला शुरु किया (ग़ज़वा कहते हैं जिसमें रसूलुल्लाह सल्ल० ख़ुद शरीक हों और जिसमें हुज़ूर न जाएं बल्कि सिर्फ़ सहाबा को भेज दें उसे 'सराया' कहते हैं)



ग़ज़वात व सराया की तारीख़ व तादाद में चूँकि बहुत इख़्तिलाफ़ (विभिन्न मत) हैं इसलिए हम चंद अहम ग़ज़वात व तारीख़ को बहुत मुख़्तसर तौर से जिसे मुफ़्ती शफ़ी साहब ने बयान किया है, दर्ज करते हैं।

### पहली हिजरी-

आप (सल्ल०) ने दो सराये भेजे एक सरिया हमजः (रज़ि०) और दूसरा सरिया ओबैदह (रज़ि०) की क़यादत में।

### दूसरी हिजरी-

इसमें चार ग़ज़वे हुए और तीन सराये

(१) ग़ज़व-ए-अबवा जिसे ग़ज़व-ए-दवान भी कहते हैं।
(२) ग़ज़व-ए-बद्र कुबरा।
(३) ग़ज़व-ए-बनी क़ैनक़अ़।
(४) ग़ज़व-ए-सवीक़।

### सराया-

(१) अ़ब्दुल्लाह बिन जहश (रज़ि०)
(२) सरया उमैर (रज़ि०)
(३) सरया सालिम (रज़ि०)

### तीसरी हिजरी-

इसमें तीन ग़ज़वे और दो सराय हुए-

(१) ग़ज़व-ए-गतफ़ान।
(२) ग़ज़व-ए-उहद।

### सराया-

(१) सरया मुहम्मद बिन मुस्लिम (रज़ि०)
(२) सरया ज़ैद बिन हारिस (रज़ि०)

### चौथी हिजरी-

इसमें दो ग़ज़वे और चार सरया हुई-

(१) ग़ज़्व-ए-बनी नज़ीर।

(२) ग़ज़्व-ए-बद्र सुगरा।

## सराया-

(१) सरया अबू सल्मा (रज़ि०)

(२) सरया अ़ब्दुल्लाह बिन अनीस।

(३) सरया मुन्ज़िर।

(४) सरया मुर्सिद।

## पाँचवी हिजरी-

इसमें चार गज़्वे हुए-

(१) ग़ज़्व-ए-जातुर्रिकअ़।

(२) ग़ज़्व-ए-दूमतुलजुन्दल।

(३) ग़ज़्व-ए-मुरैसीअ़ जिसे ग़ज़्व-ए-बनी मुत्तलिक़ भी कहते हैं।

(४) ग़ज़्व-ए-मुस्तलिक।

## छठी हिजरी

इसमें तीन ग़ज़्वे और ग्यारह सरये हुए-

(१) ग़ज़्व-ए-बनी लह़यान।

(२) ग़ज़्व-ए-ग़ाबा जिसे कुरह भी कहते हैं।

(३) ग़ज़्व-ए-हुदैबिया।

## सराया-

(१) सरया मुह़म्मद बिन मुस्लिम किर्ता की ओर।

(२) सरया अकाश।

(३) सरया मुह़म्मद बिन मुस्लिमा जिलकस्तद की ओर।

(४) सरया ज़ैद बिन हारसा।

(५) सरया अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़।

(६) सरया अ़ली (रज़ि०)।

(७) सरया ज़ैद बिन हारसा।



(८) सरया अ़ब्दुल्लाह बिन अतीक़।

(९) सरया अ़ब्दुल्लाह बिन ख़ाहा।

(१०) सरया क़र्ज़ बिन जाबिर।

(११) सरया अमरुज़्ज़मुर्रा।

## सातवीं हिजरी-

इसमें एक ग़ज़्वा और पाँच सराया हुई-

(१) ग़ज़्व-ए-ख़ैबर।

## सराया-

(१) सरया अबू बक्र।

(२) सरया बुशर बिन सअ़द।

(३) सरया ग़ालिब बिन अ़ब्दुल्लाह।

(४) सरया बशीर।

(५) सरया अजज़म।

## आठवीं हिजरी-

इसमें चार ग़ज़्वे और दस सराए भेजे-

(१) ग़ज़्व-ए-मूता।

(२) फ़तेह़ मक्का।

(३) ग़ज़्व-ए-हुनैन।

(४) ग़ज़्व-ए-ताइफ़।

## सराया-

(१) सरया ग़ालिब बनी अलूह की ओर।

(२) सरया ग़ालिब फ़िदक की ओर।

(३) सरया शुजअ़।

(४) सरया कअ़बः।

(५) सरया अम्र बिन आ़स।

(६) सरया अबू उबैदह बिन जर्राह।
(७) सरया अबू कतादह़।
(८) सरया ख़ालिद जिसे ग़मीसा भी कहते हैं।
(६) सरया तुफ़ैल बिन अमर दौसी रज़ि०
(१०) सरया कुतबा।

## नवीं हिजरी–

इसमें एक ग़ज़वा और तीन सराया भेजे–
(१) ग़ज़व–ए–तबूक़।

## सराया–

(१) सरया अलक़मा।
(२) सरया अ़ली।
(३) सरया अकाशा।

## दसवीं हिजरी–

इस साल केवल दो सरये रवाना किए गए–
(१) सरया ख़ालिद बिन वलीद को नज़राना और सरया अली को यमन की ओर भेजा। इसी साल हज्जतुल विदा भी हुआ और इस साल केवल एक सरया हज़रत उ़सामा की क़यादत में जाने का हुक्म दिया जो आप (सल्ल०) की वफ़ात के बाद रवाना हो सके।

## सुलेह हुदैबिया और बैते रिज़वान

शुरु ज़ीकअदह ६ हिज्री में रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने मक्का का इरादा फ़रमाया और उमरः की नियत से एह़राम बांधा और चौदह या पन्द्रह सौ सह़ाबा के साथ आप (सल्ल०) रवाना हुए। एक स्थान हुदैबिया मक्का से कुछ फ़ासले पर है, जहाँ आप (सल्ल०) ने क़याम किया और आप (सल्ल०) ने ह़ज़रत उ़स्मान को मक्का भेजा कि कुरैश को बता दें कि हुजूर (सल्ल०) इस वक़्त सिर्फ़ बैतुल्लाह की ज़ियारत और उमरः के लिए तशरीफ़ ला रहे हैं और कोई दूसरा मक़सद नहीं है। लेकिन ह़ज़रत



उ़स्मान (रज़ि०) मक्का पहुँचे तो काफ़िरों ने उन को रोक लिया। इधर यह ख़बर मशहूर हो गई कि काफ़िरों ने ह़ज़रत उ़स्मान (रज़ि०) को क़त्ल कर दिया और जब हुज़ूर (सल्ल०) को यह ख़बर मिली तो आप (सल्ल०) ने एक पेड़ के नीचे बैठकर सह़ाबा से जिहाद पर बैत ली जिसको 'बैते रिज़वान' कहा जाता है।

बाद में मालूम हुआ कि यह ख़बर ग़लत थी बल्कि कुरैश ने सुहैल बिन अम्र को सुलह़ की शर्त के लिए भेजा था जिसमें दस साल की सुलेह़ के लिए सुलह़नामा तैयार हुआ जिसकी शर्ते इस प्रकार थीं:–

(१) मुसलमान इस वक़्त वापस जाएँ।
(२) अगले साल सिर्फ़ तीन दिन ठहर कर वापस जाएं।
(३) हथियार लेकर न आएं, तलवार साथ में हो तो म्यान में रखें।
(४) मक्का से किसी मुसलमान को अपने साथ न ले जाएं।
(५) अगर कोई मुसलमान मक्का में रहना चाहे तो उसे मना न करें।
(६) अगर कोई शख़्स मक्का से मदीना चला जाए तो उसे वापस कर दें।
(७) अगर मदीना से कोई आ जाए तो काफ़िर उसे वापस कर दें।

यह तमाम शर्ते देखने में मुसलमानों के ख़िलाफ़ थीं और यह सुलेह दबकर जैसे मालूम हो रही थी लेकिन अल्लाह ने इसे फ़तेह नाम रखा जबकि सहाबा–ए–कराम और ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) ने तो नागवारी का इज़हार भी किया, लेकिन आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि मुझे अल्लाह ने यही हुक्म दिया है।

## हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) का दावती ख़त बादशाहों के नाम

इस सुलह़ हुदैबिया के बाद कुछ सुकून मिल गया तो हुज़ूर (सल्ल०) ने अम्र बिन उमय्या (रज़ि०) को अस्मअ़ नामी नज्जाशी बादशाह, ह़ब्शा की तरफ़ भेजा उसने हुज़ूर (सल्ल०) के नाम मुबारक को दोनों आँखों पर रखा और तख़्त से नीचे उतर कर ज़मीन पर बैठ गया और इस्लाम कुबूल कर लिया।

इसी तरह दहिया कलबी (रज़ि०) को हिरक़्ल नामी बादशाह, क़ैसरे रुम के पास भेजा तो उसको यक़ीन आ गया कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ही आख़िरी रसूल हैं लेकिन अपनी क़ौम के डर से इस्लाम नहीं क़ुबूल किया।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ैफ़ा सहमी (रज़ि०) को ख़ुसरु परवेज़, ईरान के बादशाह की तरफ़ रवाना किया उस बद्बख़्त ने नाम मुबारक को फाड़ डाला, फिर जब हुज़ूर (सल्ल०) को इसकी ख़बर मिली तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया अल्लाह इसको इसी तरह पारह-पारह करे जिस तरह इसने हमारे ख़त के साथ किया। थोड़े ही दिनों बाद ख़ुसरु परवेज़ ख़ुद अपने बेटे शेरबिया के हाथ बड़ी बेदर्दी से मारा गया।

हज़रत अम्रबिन आस (रज़ि०) को बादशाह ने उम्मान यानी ज़फ़ीर और अ़ब्दुल्लाह के पास भेजा उनको भी ज़ाती तह्क़ीक़ और पिछली किताबों के हवाले से आप (सल्ल०) को आख़िरी नबी होने का यक़ीन आ गया और दोनों मुसलमान हो गये, उसी वक़्त से ज़कात का माल जमा करना शुरु कर दिया और हज़रत अम्र बिन आस (रज़ि०) के सुपुर्द कर दिया।

हातिबा बिन अबी बलतअ़ः (रज़ि०) को सुल्ताने मिस्र व इस्कन्दरिया की तरफ़ भेजा तो उसने हुज़ूर (सल्ल०) के लिए एक कनीज़ मारिया किब्तिया (रज़ि०) और एक सफ़ेद खच्चर जिस का नाम दुलदुल था और एक हज़ार दीनार व बीस जोड़े भी हद्या में भेजे।

## उमर-ए-क़ज़ा

सुलेह़ हुदैबिया में जो उमरा छोड़ दिया था और कुफ़्फ़ारे क़ुरैश से यह मुआ़हिदा हुआ था कि अगले साल उमरा करेंगें और तीन दिन से ज़्यादा क़याम न करेंगें इस साल सातवीं हिजरी में आप (सल्ल०) और आपके तमाम साथियों ने शर्त के मुताबिक़ पूरी पाबन्दी के साथ उमरा अदा फ़रमा कर वापस तशरीफ़ ले आये।

## फ़तेह़ मक्का

सुलेह़ हुदैबिया में जो सुलेह़नामा लिखा गया था मुसलमानों ने उसी के मुताबिक़ अ़मल किया लेकिन आठवीं हिजरी में ही क़ुरैशे मक्का ने वादा ख़िलाफ़ी की, तो हुज़ूर (सल्ल०) ने एक क़ासिद भेजकर क़ुरैश के सामने सुलेह़ की अहद को दोबारा करने की पेशकश की और आख़िर में यह लिख दिया कि अगर यह शर्तें मंज़ूर न हों तो हुदैबिया का मुआ़हिदा टूट गया इस पर क़ुरैश ने मुआ़हिदा को तोड़ने ही को पसंद किया।



यह सुनकर आप (सल्ल०) ने जिहाद की पूरी तैयारी शुरु कर दी और १० रमज़ान ८ हिज्री अस्र के बाद दस हज़ार सहाबा (रज़ि०) के साथ एक जगह क़ुदैद में इफ़्तार करके मग़्रिब की नमाज़ पढ़ी और मक्का पहुँच कर ख़ालिद बिन वलीद को एक लश्कर के साथ ऊपर की तरफ़ से मक्का में दाख़िल होने का हुक्म दिया और कहा जो शख़्स तुमसे मुक़ाबला न करे तुम भी उसे क़त्ल न करना। और दूसरी तरफ़ ख़ुद हुज़ूर (सल्ल०) दाख़िल हुए और एलान कर दिया कि जो शख़्स मस्जिद में या अबू सुफ़्यान के घर में दाख़िल हो जाए वह मामून रहेगा और जो अपने घर का दरवाज़ा बन्द कर ले वह भी मामून है।

२० रमज़ान को रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने तवाफ़ किया उस वक़्त तक कअबः में तीन सौ साठ बुत थे। आप (सल्ल०) के हाथ में एक लकड़ी थी जब आप (सल्ल०) किसी बुत के पास से गुज़रते तो इशारा करते और वह बुत मुँह के बल गिर पड़ता और आप (सल्ल०) अपनी ज़बान मुबारक से यह पढ़ते जाते **(जाअलहक़ वज़हक़ल बातिल इन्नल बातिलकान ज़हूक़ा)**

## तमाम जमअ़तों का इस्लाम क़ुबूल करना

सुलेह़ हुदैबिया के बाद कुछ ऐसा मामला हुआ कि जो इस्लाम और मुसलमानों के दुश्मन थे वही फ़ौज की फ़ौज इस्लाम क़ुबूल करने लगे। सक़ीफ़ की एक जमात तबूक से वापसी पर मदीना हाज़िर हुई और इस्लाम क़ुबूल कर लिया। इसी तरह बनी फ़ुजारह, बनी तमीम, बनी सअ़द, बनी कुन्दह, बनी अब्द कैस, बनी हनीफ़ा, बनी कहतान, बनी ह़ारिस, बनी मुह़ासिब, बनी हमदान, बनी गस्सान, वग़ैरह सभी क़बीले ख़ुद से आ आ कर अपनी ख़ुशी से इस्लाम क़ुबूल किया। यहाँ तक कि १० हिज्री तक हुज़ूर (सल्ल०) के साथ एक लाख से ज़्यादा मुसलमान हो गये।

## आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) का आख़िरी ह़ज ज़िल्ह़िज १० फ़रवरी ६३२ ई०

आप (सल्ल०) के इस आख़िरी ह़ज को 'ह़ज्जतुल विदा' 'ह़ज्जतुल बलाग़' 'ह़ज्जतुत्तमाम' के नाम से जाना जाता है। जिसमें एक लाख से ज़्यादा सह़ाबी साथ

थे[1]। और आप (सल्ल०) तमाम सहाबा के साथ २५ ज़ीक़अ़दह दस हिज्री दोशम्बा के दिन हुज़ूर (सल्ल०) हज के लिए मदीना से मक्का की तरफ़ चले और (मदीना से छः मील की दूरी पर एक जगह है ज़ुलहुलैफ़ा) वहाँ सबने एहराम बाँधा और ४ जिल्हिज को मक्का में दाख़िल हुए और कअ़बे का तवाफ़ किया फिर हज का पूरा तरीक़ा बताने के बाद ९ तारीख़ को अरफ़ात तशरीफ़ ले गये।

वहाँ आप (सल्ल०) ने एक ख़ुत्बः दिया जो आप (सल्ल०) का आख़िरी पैग़ाम था।

## अरफ़ा का आख़िरी ख़ुत्बः

"ऐ लोगों! मेरी बात सुनो ताकि मैं तुम्हारे लिये कुछ ज़रुरी बातों को बयान करूँ मालूम नहीं कि आइन्दह साल मैं फिर मिल सकूँ या न मिल सकूँ।

**"तुम्हारा ख़ून और तुम्हारा माल उसी तरह हराम है जिस तरह यह दिन इस महीना और इस शहर में हराम है यह भी याद रखो कि हर जाहिली चीज़ ग़लत है और जाहिलियत (इस्लाम से पहले) के तमाम ख़ून ख़त्म कर दिये गये और सबसे पहले मैं अपने ख़ानदान इब्ने रबीआ़ इब्ने हारिस का ख़ून माफ़ करता हूँ जिसने बनी सअ़द में परवरिश पाई और हुज़ैफ़ा ने क़त्ल कर डाला, जाहिलियत के तमाम सूद भी बातिल कर दिये गये और सबसे पहले अपने ख़ानदान का सूद अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब का सूद बातिल करता हूँ। यह सब का सब बातिल है। औ़रतों के बारे में ख़ुदा से डरो तुमने उनको अल्लाह की अमानत के तौर पर हासिल किया है और उनकी शर्मगाहों को अल्लाह की बात के साथ हलाल समझा है, और तुम्हारी तरफ़ से उन पर यह ज़िम्मेदारी हैं कि वह तुम्हारे बिस्तर पर किसी ग़ैर को न आने दें, अगर वह ऐसा करें तो तुम उनको ऐसी मार मारो जिसका निशान ज़ाहिर न हो और उनका हक़ तुम्हारे ऊपर यह है कि उनको अच्छे तरीक़े पर उनकी ख़ुराक और पोशाक का इन्तिज़ाम करो, मैं तुम में एक चीज़ छोड़ कर जाता हूँ, अगर तुमने उसे मज़बूती से पकड़ लिया तो तुम गुमराह न होगे वह चीज़ क्या है "अल्लाह की किताब" तुमसे अल्लाह के बारे में पूछा जायेगा तो तुम क्या जवाब दोगे?** सहाबा ने कहा कि हम कहेंगे कि आप ने अल्लाह

१. ज़ादुल मआ़द (ख़ुलासा)



का पैग़ाम पहुँचा दिया अपना फ़र्ज़ अदा कर दिया। इस पर आप ने शहादत की उँगली आसमान की तरफ़ उठाई और तीन बार फ़रमाया **"ऐ अल्लाह! तू गवाह रहना"[1] और फ़रमाया हाज़िरीन को चाहिए कि जो हाज़िर नहीं है उन तक यह बातें पहुँचा दें।** फिर आप (सल्ल०) ने अ़स्र के बाद यह दुआ़ माँगी।

**"ऐ अल्लाह तू मेरी बात सुनता है और मेरी जगह को देखता है और मेरे अन्दर व बाहर को तू जानता है आप से मेरी कोई बात छुपी नहीं रह सकती, मैं मुसीबत ज़दह हूँ। मुहताज हूँ, फ़रियादी हूँ, पनाह चाहने वाला हूँ। परेशान हूँ और हिरासा हूँ अपने गुनाहों का इक़रार करने वाला हूँ। एतिराफ़ करने वाला हूँ तेरे आगे सवाल करता हूँ जैसे बेकस सवाल करता है, तेरे आगे गिड़गिड़ाता हूँ जैसे गुनहगार ज़लील व ख़्वार गिड़गिड़ाता हैं और तुझसे तलब करता हूँ जैसे ख़ौफ़ज़दह आफ़त से घिरा हुआ तलब करता हैं जिसकी गर्दन तेरे सामने झुकी हो और उसके आँसू बह रहे हों और तन बदन से तेरे आगे झुका हो और अपनी नाक तेरे सामने रगड़ रहा हैः ऐ रब तू मुझे अपने से दुआ़ माँगने में नाकाम न रख और मेरे हक़ में बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला हो जा, ऐ सब माँगे जाने वालों से बेहतर और सब देने वालों से अच्छे।**

इसी मौक़े पर यह आयत नाज़िल हुई **"अलयौम अकमलतु लकम दीनकुम व अतममतु अ़लैकुम नेअ़मती व रज़ीतुलकुमुलइस्लाम दीना"[2]**

फिर जब सूरज डूब गया तो आप (सल्ल०) हज से फ़ारिग़ हुए और दस दिन तक मक्का में ठहरने के बाद मदीना तय्यबा वापस तशरीफ़ ले गये।

## हज के बाद मदीना में सरिया उसामा

हज से फ़ारिग़ होने के बाद आप (सल्ल०) मदीना तशरीफ़ लाए तो २६ सफ़र ११ हिज्री को आप (सल्ल०) ने एक *'सरया जिहाद'* रुम के लिये तैयार किया जिसमें हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) और फ़ारुक़ेआ़ज़म (रज़ि०) और अबू उबैदह जैसे लोगों पर हज़रत उ़सामा (रज़ि०) को अमीर बनाया जो आप (सल्ल०) का आख़िरी लश्कर था जिसे अभी आप (सल्ल०) ने रवाना ही किया था कि आप (सल्ल०) को

१. मुस्लिम, अबूदाउद, हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह से........)
२ सूरः माइदा ३

बुख़ार आना शुरु हो गया।

## आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की बीमारी

२८ सफ़र दिन बुधवार ११ हिज्री की रात को आप "(सल्ल०) आधी रात में" "ज़न्नतुलबक़ी" तशरीफ़ ले गये क़ब्र वालों के लिए दुआ-ए-मग़फ़िरत की और अपने घर तशरीफ़ ले आए जब सुबह् हुई तो इसी दिन से बीमारी शुरु हो गई[१]। उस वक़्त आप (सल्ल०) ह़ज़रत मैमूना (रज़ि०) के घर पर थे आप (सल्ल०) ने तमाम अज़वाज़े मुतह्हरात को बुलवाया और इजाज़त ली कि बीमारी के ज़माने में ह़ज़रत आ़इशा के घर पर क़याम करुँ सब ने इजाज़त दे दी। आप (सल्ल०) ह़ज़रत फ़ज़्ल बिन अ़ब्बास और ह़ज़रत अ़ली (रज़ि०) के सहारे से ह़ज़रत आ़इशा के घर तशरीफ़ ले आए[२]।

ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि०) बयान करती है कि आप (सल्ल०) की जिस मर्ज़ में वफ़ात हुई फ़रमाते थे कि आ़इशा मैं उस खाने की तकलीफ़ अब तक मह़सूस करता हूँ जो मैने ख़ैबर में खाया था इस वक़्त उस ज़हर[३] से मेरी रग कट रही है।

## ह़ज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) की इमामत

धीरे-धीरे मर्ज़ इतना बढ़ गया कि आप (सल्ल०) मस्जिद तक भी तशरीफ़ न ला सकते थे तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि सिद्दीके अकबर से कहो नमाज़ पढ़ाएँ ह़ज़रत सिद्दीके अकबर ने लगभग सत्तरह नमाज़ें पढ़ाईं एक रोज़ आप (सल्ल०) ह़ज़रत अ़ली व अ़ब्बास (रज़ि०) के सहारे से जुह्र की नमाज़ के लिए बाहर तशरीफ़ लाए तो ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि०) पीछे हटने लगे इस पर आप (सल्ल०) ने इशारे से मना किया और कहा कि मुझे अबूबक्र के बगल में बिठा दो तो ऐसा ही किया गया ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि०) खड़े होकर नमाज़ पढ़ाते रहे और आप (सल्ल०) बगल में बैठ कर नमाज़ पढ़ते रहे। फिर आप (सल्ल०) ने मेम्बर की पहली सीढ़ी पर बैठकर ख़ुत्बः दिया।

---

१. सीरत इब्निहिशाम, भाग २-६४२ व इब्नि कसीर भाग ४-४४३
२. बुख़ारी शरीफ़ (बाबमर्ज़ुन्नबी सल्ल० व वफ़ात)
३. सह़ी बुख़ारी (बाब मर्ज़ुन्नबी सल्ल० व वफ़ात व इब्निकसीर भाग ४-४४६)



## आप (सल्ल०) का आख़िरी ख़ुत्बः

**"ऐ लोगों! मुझे मालूम हुआ है कि तुम अपने नबी की मौत से डर रहे हो क्या मुझसे पहले कोई नबी हमेशा रहा है जो मैं रहता, हाँ मैं अपने परवरदिगार से मिलने वाला हूँ और तुम मुझसे मिलने वाले हो। हाँ तुम्हारे मिलने की जगह हौज़-ए-कौसर है। तो जो शख़्स यह पसंद करे कि क़ियामत के दिन हौज से सैराब हो तो उसको चाहिए कि अपने हाथ और ज़बान को बुरी और बे ज़रुरत बातों से रोके रहे और तुम्हें मुहाजिरीन के साथ अच्छा बर्ताव की वसीअ़त करता हूँ और फ़रमाया।**

**जो अल्लाह की इताअ़त करते हैं और उनके बादशाह उनके साथ इन्साफ़ करते हैं। और जब वह अपने परवरदिगार की ना फ़रमानी करते हैं तो वह उनके साथ बेरह़मी करते हैं[१]।**

**इसके बाद आप (सल्ल०) ने फ़रमाया अबूबक्र (रज़ि०) का सबसे ज़्यादा मुझ पर एह़सान है और अगर मैं ख़ुदा के सिवा किसी को ख़लील (दोस्त) बनाता तो अबूबक्र को ही बनाता चूँकि ख़लील ख़ुदा के सिवा कोई नहीं है इसलिए अबूबक्र (रज़ि०) मेरे भाई और दोस्त हैं और फ़रमाया "मस्जिद में जितने दरवाज़े हैं वह सब बन्द कर दिये जायें सिवाए अबूबक्र (रज़ि०) के[२]।"** इससे साफ़ मालूम हो गया था कि आप (सल्ल०) के बाद ख़लीफ़ा ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि०) ही बनेंगे।

दो रबीउलअव्वल दोशम्बा के दिन लोग सुबह् की नमाज़ ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि०) के पीछे पढ़ रहे थे कि अचानक आप (सल्ल०) ने ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि०) के हुजरे का पर्दा खोलकर लोगों की तरफ़ देखा और मुस्कुराए सिद्दीके अकबर देखकर पीछे हटने लगे तो आप ने इशारे से फ़रमाया पढ़ाओ। इसी दिन जुह्र के बाद इस आलम से इन्तिक़ाल फ़रमाकर अपने रफ़ीके आला से जा मिले। *"इन्ना लिल्लाहि वइन्नइलैहि रजिऊ़न"* सही बुख़ारी के मुताबिक़ उस वक़्त आप (सल्ल०) की उम्र तिर्सठ साल की थी[३]।

---

१. अस्सीरतुल मुहम्मदिया
२. सह़ी बुख़ारी व फ़तहुलबारी भाग एक- ३५६
३. तारीख़े वफ़ात में मशहूर है कि १२ रबीउलअव्वल को वफ़ात हुई लेकिन ह़िसाब करने से किसी तरह वह तारीख़े वफ़ात नहीं निकलती क्योंकि वफ़ात दोशम्बा को हुई और यह यक़ीनी है कि आप (सल्ल०) का ह़ज ६ जिल्ह़िज जुमा को हुआ इन दोनों बातों के मिलाने से १२ रबीउलअव्वल दोशम्बा नहीं पड़ती इसलिए ह़ाफ़िज़ इब्नेहजर ने शरह सही बुख़ारी में लम्बी बहस के बाद इस को सही क़रार दिया है कि वफ़ात की तारीख़ दूसरी रबीउलअव्वल है (किताब की ग़ल्ती की वजह से २ का १२ बन गया)

# आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के आख़िरी कलिमात

हज़रत आ़इशा (रज़ि०) फ़रमाती हैं कि इस मर्ज़ के दौरान कभी-कभी आप (सल्ल०) चेहरा मुबारक से चादर उठा कर फ़रमाते कि "यहूद व नसारा तबाह हों, उन्होंने अपने नबियों की क़ब्रों को सज़दागाह बना लिया"।

आप (सल्ल०) ने मुसलमानों को इससे ख़बरदार किया[१] और ज़्यादातर वसीयत यह थी **"अस्सलातु व मामलकत ऐमानुकुम" देखो नमाज़ का ख़याल रखना और अपने मातहतों और गुलामों का"।**

यह आप बराबर फ़रमाते रहे। इसी तरह हज़रत आ़इशा (रज़ि०) फ़रमाती हैं कि "आप (सल्ल०) के सामने पानी का कटोरा था आप (सल्ल०) अपने हाथ पानी के अन्दर डालते और चेहरा पर फेर लेते और उसके बाद फ़रमाते **"लाइलाहइल्लल्लाह, इन्नल................"** फिर आप (सल्ल०) ने बाई उंगली ऊपर उठाई और फ़रमाने लगे **"फ़ी रफ़ीकिलआ़ला.......फ़ी......रफ़ीकिलआ़ला[२]।**

यही कहते-कहते आप (सल्ल०) की रुह पाक परवाज़ हो गयी।

**"अल्लाहुम्म सल्लिअ़ला मुह़म्मदिव व अ़ला आलि मुह़म्मदिन कमासन्लैता अ़ला इब्राहीम व अ़ला आले इब्राहीम इन्नक ह़मीदुम्मजीद"**

# आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की तजहीज़ व तकफ़ीन

आप (सल्ल०) के वफ़ात की ख़बर सहाबा में पहुँचते ही सबके होश उड़ गए और हज़रत फ़ारुके आज़म जैसे सहाबी ग़म से आप (सल्ल०) की मौत का इन्कार करने लगे तो सिद्दीके अकबर उस वक़्त तशरीफ़ लाये और एक ख़ुत्बः दिया और सब्र की तलक़ीन के बाद फ़रमाया "जो शख़्स मुहम्मद (सल्ल०) की अ़िबादत करता था तो वह सुन ले कि आप (सल्ल०) वफ़ात पा गये और जो अल्लाह की अ़िबादत करता था तो वह समझ ले कि वह आज भी ज़िन्दह है"।

यह सुनकर सहाबा को कुछ होश आया फिर हज़रत अबूबक्र (रज़ि०) को ख़लीफ़ा बनाया गया इसके बाद इतना वक़्त नहीं था कि उस दिन तद्फ़ीन हो और चूँकि

१. बुख़ारी शरीफ़ (बाबमर्जुन्नबी सल्ल० व वफ़ात)
२. सही बुख़ारी बाब मर्जुन्नबी सल्ल० व वफ़ात



आप (सल्ल०) अपने ही हुजरे में वफ़ात पाये थे इसलिए वहीं लोग थोड़े-थोड़े करके जाते और नमाज़े जनाज़ः अपनी-अपनी पढ़ते। इस तरह आप (सल्ल०) के नमाज़े जनाज़ः की किसी ने इमामत नहीं की इसी लिए तद्फ़ीन में भी देर लग गई और मंगल का दिन गुज़र कर रात में फ़राग़त मिली[१]।

आप (सल्ल०) को हज़रत फ़ज़्ल बिन अ़ब्बास (रज़ि०) और उसामा बिन ज़ैद (रज़ि०) ने पर्दा किया और हज़रत अ़ली (रज़ि०) व इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) ने ग़ुस्ल दिया (वाक़दी की रिवायत के मुताबिक़) और बिन ख़ौला अन्सारी पानी का घड़ा भर-भर कर ला रहे थे और हज़रत अ़ली (रज़ि०) ने जिस्म मुबारक को सीने से लगा रखा था और हज़रत अ़ब्बास अ़ली (रज़ि०) और उनके दोनों साह़बज़ादे आप (सल्ल०) के जिस्म मुबारक को करवटें बदलाते और उस्माना बिन ज़ैद ऊपर से पानी डालते जा रहे थे[२]।

# आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की क़ब्र मुबारक

हज़रत अबूतल्हा ने बगली क़ब्र जिस हुजरा में आप (सल्ल०) की वफ़ात हुई थी खोदी और आप (सल्ल०) के जिस्म मुबारक को हज़रत अ़ली (रज़ि०), फ़ज़्ल बिन अ़ब्बास (रज़ि०) व उस्मान बिन ज़ैद (रज़ि०) और हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि०) ने क़ब्र में उतारा[३] और आप (सल्ल०) की क़ब्र शरीफ़ एक बालिशत ऊँची रखी गयी।

बेहिसाब दुरुद व सलाम हो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर

१. इब्निसअ़द की कुछ रिवायतों में है कि बुध को हुई लेकिन उसी में है कि मंगल को हुई, इब्निमाज़ा में मंगल का दिन है।
२. तबक़ात इब्नि सअ़द ६२ व अबूदाऊद व मुस्लिम (किताबुल जनायज) व इब्निमाज़ा।
३. अबूदाऊद (किताबुल जनाइज)

# भाग–दो

## हर चीज़ से ज़्यादा अल्लाह, रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और दीन की मुहब्बत

इस्लाम जिस तरह हम को अल्लाह व रसूल (सल्ल०) पर ईमान लाने और नमाज़, रोज़ा, और हज व ज़कात अदा करने की तअ़लीम देता है, और ईमानदारी और परहेज़गारी, और खुशअख़्लाक़ी और नेक बनने की ताकीद करता है इसी तरह उस की एक ख़ास हिदायत और तअ़लीम यह भी है कि हम दुनिया की हर चीज़ से ज़्यादा यहाँ तक कि अपने माँ बाप और बीवी बच्चों और जान व माल और इ़ज़्ज़त व आबरु से भी ज़्यादा, ख़ुदा और उस के रसूल (सल्ल०) और उस के दीन से मुहब्बत करें।

यानी अगर कभी भी कोई ऐसा नाज़ुक और सख़्त वक़्त आए कि दीन पर क़ायम रहने और अल्लाह व रसूल (सल्ल०) के हुक्मों पर चलने की वजह से हमें जान व माल और इ़ज़्ज़त व आबरु का ख़तरा हो, तो उस वक़्त भी अल्लाह व रसूल (सल्ल०) को और दीन को न छोड़ें, और जान व माल या इ़ज़्ज़त व आबरु पर जो कुछ गुज़रे, गुज़र जाने दें।

क़ुर्आन व ह़दीस में फ़रमाया गया है कि जो लोग इस्लाम का दावा करें और अल्लाह व रसूल (सल्ल०) के साथ और उन के दीन के साथ ऐसी मुहब्बत और इस दर्जे का ताल्लुक़ न हो, वह असली मुसलमान नहीं हैं, बल्कि वह अल्लाह की तरफ़ से सख़्त सज़ा और अ़ज़ाब के मुस्तह़िक़ हैं। सूरः तौबा में फ़रमाया गया है–

قُلْ اِنْ كَانَ اٰبَآؤُكُمْ وَاَبْنَآؤُكُمْ وَاِخْوَانُكُمْ وَاَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيْرَتُكُمْ وَاَمْوَالُ
اِقْتَرَفْتُمُوْهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسٰكِنُ تَرْضَوْنَهَآ اَحَبَّ
اَحَبَّ اِلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَجِهَادٍ فِيْ سَبِيْلِهٖ فَتَرَبَّصُوْا حَتّٰى يَاْتِيَ
اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ۗ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ

(सूरः अल् तौबा)



(ऐ रसूल सल्ल०) "तुम उन को बता दो कि अगर तुम्हारे माँ बाप, तुम्हारी औलाद, तुम्हारे भाई, तुम्हारी बीवियाँ, कुन्बा क़बीला, तुम्हारा माल व दौलत, जिसे तुम ने कमाया है और तुम्हारी तिजारत जिस के कम होने से तुम डरते हो और तुम्हारे रहने के मकानात जो तुम्हें पसन्द हैं (सो अगर यह चीज़ें) तुम को ज़्यादा महबूब हैं अल्लाह से और उस के रसूल (सल्ल०) से और उस के दीन के लिए कोशिश करने से, तो अल्लाह के फ़ैसले का इन्तिज़ार करो और (याद रखो) अल्लाह नहीं हिदायत देता नाफ़रमानों को"।

इस आयत से मालूम हुआ कि जो लोग अल्लाह व रसूल (सल्ल०) के और उन के दीन के मुक़ाबले में अपने माँ बाप या बीवी बच्चों या माल व जायदाद से ज़्यादा मुहब्बत रखते हों और जिन को अल्लाह व रसूल (सल्ल०) की रज़ामन्दी और दीन की ख़िदमत व तरक़्क़ी से ज़्यादा फ़िक्र उन चीज़ों की हो, वह अल्लाह के सख़्त नाफ़रमान हैं और उस के ग़ज़ब के मुस्तह़िक़ हैं।

एक मशहूर और सही ह़दीस में है, रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमायाः

"ईमान की मिठास और दीन का ज़ायक़ा उसी शख़्स को नसीब होगा जिस में तीन बातें जमा हों "अव्वल यह कि अल्लाह व रसूल (सल्ल०) की मुहब्बत उस को तमाम लोगों से ज़्यादा हो। दूसरे यह कि जिस आदमी से मुहब्बत करे सिर्फ़ अल्लाह के लिए करे (गोया ज़ाती और ह़क़ीक़ी मुहब्बत सिर्फ़ अल्लाह ही से हो)। तीसरी यह कि ईमान के बाद कुफ़्र की तरफ़ लौटना और दीन को छोड़ना उस को ऐसा नागवार और गिरां हो जैसा कि आग में डाला जाना"।

तो मालूम हुआ कि अगर किसी आदमी से भी मुहब्बत करे तो अल्लाह ही के लिए करें और दीन से उन को ऐसी उल्फ़त हो कि उस को छोड़ कर कुफ़्र का तरीक़ा अख़्तियार करना उन के लिए इतना शाक़ और ऐसा तकलीफ़देह हो जैसा कि आग के अलाव में डाला जाना।

एक और ह़दीस में है; हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमायाः–

"तुम में से कोई शख़्स उस वक़्त तक पूरा मोमिन और असली मुसलमान नहीं हो सकता जब तक कि उस को मेरी मुहब्बत अपने माँ बाप और अपनी औलाद से और दुनिया के सारे आदमियों से ज़्यादा न हो"।

ईमान दरअसल इसी का नाम है कि आदमी बिल्कुल अल्लाह व रसूल (सल्ल०) का हो जाए और अपने सारे ताल्लुक़ात और ख़्वाहिशात को उन के ताल्लुक़ पर और उन के दीन की राह में क़ुर्बान कर सके, जिस तरह सहाब-ए-किराम (रज़ि०) ने कर दिखाया और आज भी अल्लाह के सच्चे और सादिक़ बन्दों का यही हाल है, अगरचे उन की तअ़दाद बहुत कम है। अल्लाह तआ़ला हम सब को भी उन्हीं के साथ और उन्हीं में से कर दे।

## दीन की ख़िदमत व दअ़वत

जिस तरह हमारे लिए यह ज़रुरी है कि अल्लाह व रसूल (सल्ल०) पर ईमान लाएँ और उन के बतलाए हुए नेकी और परहेज़गारी के सीधे और रौशन रास्ते पर चलें जिस का नाम "इस्लाम" है। इसी तरह हम पर यह भी फ़र्ज़ है कि अल्लाह तआ़ला के जो बन्दे इस रास्ते से बेख़बर हैं, या अपनी तबीअ़त की बुराई की वजह से इस पर नहीं चल रहे हैं उन को भी इस से वाक़िफ़ करने की और इस पर चलाने की कोशिश करें। यानी जिस तरह अल्लाह ने हम पर यह फ़र्ज़ किया है कि हम उस के अच्छे फ़रमांबरदार इबादतगुज़ार और परहेज़गार बन्दे बनें, इसी तरह उस ने यह भी फ़र्ज़ किया है कि इस मक़सद के लिए हम उस के दूसरे बन्दों में भी कोशिश करें, इसी का नाम दीन की ख़िदमत और दीन की दअ़वत है।

अल्लाह तआ़ला के नज़दीक यह काम इतना बड़ा है कि उस ने हज़ारों पैग़म्बर इस दुनिया में इसी मक़सद के लिए भेजे और पैग़म्बरों ने तरह तरह की मुसीबतें उठा के और दुख सह के दीन की ख़िदमत व दअ़वत का यह काम अन्जाम दिया, और लोगों की इस्लाह़ व हिदायत के लिए कोशिशें कीं (अल्लाह तआ़ला उन पर और उन का साथ देने वालों पर बेहिसाब रह़मतें नाज़िल फ़रमाए)।

पैग़म्बरी का यह सिल्सिला ख़ुदा के आख़िरी पैग़म्बर ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर ख़त्म हो गया और अल्लाह तआ़ला ने उन्हीं के ज़रिए अपने इस ख़ास फ़ैसले का एलान भी करा दिया कि दीन की तअ़लीम व दअ़वत और लोगों की इस्लाह़ व हिदायत के लिए आइन्दा अब कोई पैग़म्बर नहीं भेजा जाएगा, बल्कि अब क़ियामत तक यह काम उन्हीं लोगों को करना होगा, जो ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के लाए हुए दीन ह़क़ को मान चुके हैं और उन की हिदायत को क़ुबूल कर चुके हैं।



अलग़र्ज़ नुबूव्वत व रिसालत ख़त्म होने के बाद दीन की दअ़वत और लोगों की इस्लाह़ व हिदायत की तमामतर ज़िम्मेदारी हमेशा के लिए अब ह़ुज़ूर (सल्ल०) की उम्मत के सुपुर्द कर दी गई है, और दरअ़सल इस उम्मत की यह बहुत बड़ी फ़ज़ीलत है, बल्कि क़ुर्आन शरीफ़ में इसी काम और इसी ख़िदमत व दअ़वत को इस उम्मत के वजूद का मक़सद बतलाया गया है, गोया कि यह उम्मत पैदा ही इस काम के लिए की गई है।

**इर्शाद है किः-**

كُنْتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَأْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ
وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ (सूरः आले इमरान-११०)

"(ऐ उम्मते मुह़म्मद सल्ल०) तुम हो वह बेहतरीन जमाअ़त जो इस दुनिया में लाई गई हो इन्सानों की इस्लाह़ के लिए, तुम कहते हो नेकी को और रोकते हो बुराई से और सच्चा ईमान रखते हो"।

इस आयत से मालूम हुआ है कि यह उम्मते मुह़म्मद (सल्ल०) यह दुनिया की दूसरी उम्मतों और जमाअ़तों में इसी लिह़ाज़ से मुम्ताज़ और अफ़ज़ल थी कि ख़ुद ईमान और नेकी के रास्ते पर चलने के अ़लावा दूसरों को भी नेकी के रास्ते पर चलाने और बुराईयों से बचाने की कोशिश करना उस की ख़ास ख़िदमत और ख़ास ड्यूटी थी, और इसी लिए इस को "ख़ैरु उम्मति" क़रार दिया गया था। इसी से यह भी मालूम हो गया कि यह उम्मत अगर दीन की दअ़वत और लोगों की इस्लाह़ व हिदायत का यह फ़र्ज़ अदा न करे तो वह इस फ़ज़ीलत की मुस्तह़िक़ नहीं, बल्कि सख़्त मुजरिम और क़ुसूरवार है कि अल्लाह तआ़ला ने इतने बड़े काम की ज़िम्मेदारी इस के सुपुर्द की और उस ने इस को पूरा नहीं किया।

जिस तरह मुसलमानों को दुनिया की तमाम अक़वाम तक दीन का पैग़ाम पहुँचाने की ज़िम्मेदारी सौंपी गई है इसी तरह उन का यह भी फ़र्ज़ है कि दीन की दअ़वत और इस्लाह़ व हिदायत का काम पहले इस उम्मत ही के उन तब्क़ों में भी किया जाए जो दीन व ईमान और नेकी व परहेज़गारी के रास्ते से दूर हो गये हैं।

उस की एक वजह तो यह है कि जो लोग अपने को मुसलमान कहते और कहलाते हैं, ख़्वाह उन की अ़मली ह़ालत कैसी ही हो, वह बहरह़ाल ईमान व इस्लाक का इक़रार करके ख़ुदा और रसूल (सल्ल०) और उन के दीन के साथ एक क़िस्म का रिश्ता और एक तरह़ की ख़ुसूसियत पैदा कर चुके हैं और इस्लामी सोसाइटी और बिरादरी के एक फ़र्द बन चुके हैं, इस वास्ते हमारे लिए उन की इस्लाह़ व तरबियत की फ़िक्र बहरह़ाल मुक़द्दम है जिस तरह की क़ुदरती तौर से हर शख़्स पर उस की औलाद उस के क़रीबी रिश्तेदारों की ख़बरग़ीरी और देखभाल की ज़िम्मेदारी ब निस्बत दूसरे लोगों के ज़्यादा होती है।

दीन की दअ़वत और बन्देगाने ख़ुदा की इस्लाह़ व हिदायत के लिए जिस वक़्त जो कोशिश की जा सकती हो, वह भी उस वक़्त का ख़ास जिहाद है।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) नुबूव्वत के बाद तक़रीबन बारह तेरह बरस तक मक्का मुअ़ज़्ज़मा में रहे। इस पूरी मुद्दत में आप (सल्ल०) का और आप (सल्ल०) के साथियों का जिहाद यही था कि मुख़ालिफ़ों और तरह़-तरह़ की मुसीबतों के बावजूद दीन पर मज़बूती से जमे रहे और दूसरों की इस्लाह़ व हिदायत की कोशिश करते रहे और बन्देगाने ख़ुदा को ख़ुफ़िया व एलानिया दीन की दअ़वत देते रहे।

अल्लाह से ग़ाफ़िल और रास्ते से भटके हुए बन्दों को अल्लाह से मिलाने की और सह़ी रास्ते पर चलाने की कोशिश करना और उस राह में अपना पैसा ख़र्च करना और वक़्त और चैन व आराम क़ुर्बान करना, यह सब अल्लाह के नज़दीक जिहाद ही जैसा है।

इस काम के करने वालों को आख़िरत में जो अज्र व सवाब मिलने वाला है, और न करने वालों के लिए अल्लाह की नाराज़गी व ग़ज़ब के जो ख़तरे हैं उन का कुछ अन्दाज़ा मुन्दरजाज़ेल ह़दीसों से हो सकता है।

## दअ़वत की फ़ज़ीलत-

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है, रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया।

" जो शख़्स लोगों को सह़ी रास्ते की दअ़वत दे और नेकी की तरफ़ बुलाए, तो जो लोग उस की बात मान कर जितनी नेकियाँ और भलाईयाँ करेंगे और उन नेकियों का जितना सवाब उन करने वालों को मिलेगा उतना ही सवाब उस शख़्स को



भी मिलेगा जिस ने उन को नेकी की दअ़वत दी और इस की वजह से ख़ुद नेकी करने वालों के अज्र व सवाब में कोई कमी नहीं होगी"।

इस ह़दीस से मालूम हुआ कि अगर आप की दअ़वत और कोशिश से दस बीस आदमियों की भी इस्लाह़ हो गई और वह ख़ुदा और रसूल (सल्ल०) को पहचानने लगे और दीनी एह़काम पर चलने लगे, नमाज़ें पढ़ने लगे और इसी तरह़ दूसरे फ़रायज़ अदा करने लगे और गुनाहों और बुरी बातों से बचने लगे, तो उन चीज़ों का जितना सवाब उन सब को मिलेगा। उस सब के मजमुअ़े की बराबर तन्हा आप को मिलेगा। अगर आप ग़ौर करें, तो मालूम होगा कि इस क़द्र अज्र व सवाब कमाने का कोई दूसरा रास्ता ही नहीं कि एक आदमी को सैकड़ों आदमियों की इ़बादतों और नेकियों का सवाब मिल जाएगा।

## ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया-

एक दूसरी रिवायत में है रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने ह़ज़रत अ़ली (रज़ि०) से फ़रमाया।

"ऐ अ़ली (रज़ि०)! क़सम अल्लाह की अगर तुम्हारे ज़रिए एक शख़्स को भी हिदायत हो जाए, तो तुम्हारे ह़क़ में यह इस से बेहतर है कि बहुत से सुर्ख़ ऊँट तुम्हें मिल जाएँ (वाज़ेह रहे कि अहले अ़रब सुर्ख़ ऊँटों को बहुत बड़ी दौलत समझते थे)"।

ह़क़ीक़त में अल्लाह के बन्दों की इस्लाह़ व हिदायत और उन को नेकी के रास्ते पर लगाने की कोशिश, जैसा कि पहले भी अ़र्ज़ किया गया बहुत ऊँचे दर्जे की ख़िदमत और नेकी है और अम्बिया (अ़लै०) की ख़ास विरासत और नियाबत है, फिर दुनिया की किसी बड़ी से बड़ी दौलत की भी उस के मुक़ाबले में क्या ह़क़ीक़त हो सकती है।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने एक और ह़दीस में लोगों की इस्लाह़ व हिदायत के काम की अहमियत को एक अ़ाम फ़हम मिसाल के ज़रिये भी समझाया है।

आप (सल्ल०) का इर्शाद का ख़ुलासा यह है किः

"फ़र्ज़ करो एक कश्ती है जिस में नीचे ऊपर दो दर्जे हैं, और नीचे के दर्जे वाले मुसाफ़िरों को पानी ऊपर के दर्जे से लाना पड़ता है जिस से ऊपर वाले मुसाफ़िरों को तकलीफ़ होती है, और वह उन पर नाराज़ होते हैं, तो अगर नीचे वाले मुसाफ़िर अपनी ग़लती और बेवक़ूफ़ी से नीचे ही से पानी ह़ासिल करने के लिए कश्ती के

निचले हिस्से में सुराख़ करने लगें और ऊपर के दर्जे वाले उन को इस ग़लती से रोकने की कोशिश न करें, तो नतीजा यह होगा कि कश्ती सब ही को लेकर डूब जाएगी और अगर ऊपर वाले मुसाफ़िरों ने समझा बुझा कर नीचे के दर्जे वालों को इस ह़रकत से रोक दिया, तो वह उन को भी बचा लेंगे और खुद भी बच जाएँगें।

हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमायाः- "बिल्कुल इसी तरह़ गुनाहों और बुराईयों का भी ह़ाल है, अगर किसी जगह के लोग जिहालत की बातों और गुनाहों में मुब्तिला हों, और वहाँ के नेक और समझदार क़िस्म के लोग उन की इस्लाह़ व हिदायत की कोशिश न करें तो नतीजा यह होगा कि उन गुनाहगारों और मुजरिमों की वजह से खुदा का अ़ज़ाब नाज़िल होगा, और फिर सब ही उस की लपेट में आ जाएँगे, और अगर उन को गुनाहों और बुराईयों से रोकने की कोशिश कर ली गई तो फिर सब ही अ़ज़ाब से बच जाएँगे"।

एक और ह़दीस में है, हुज़ूर (सल्ल०) ने बड़ी ताकीद के साथ और क़सम खा के फ़रमाया है किः

"उस अल्लाह की क़सम! जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है, तुम अच्छी बातों और नेकियों को लोगों से कहते रहो और बुराईयों से उन को रोकते रहो। याद रखो अगर तुम ने ऐसा न किया तो बहुत मुम्किन है कि अल्लाह तुम पर कोई सख़्त क़िस्म का अ़ज़ाब मुसल्लत कर दे और फिर तुम उस से दुआ़एँ करो और तुम्हारी दुआ़एँ भी उस वक़्त न सुनी जाएँ"।

इस ज़माने के बाज़ खुदा रसीदा और रौशन दिल बुज़ुर्गो का ख़याल है कि मुसलमानों पर एक अ़र्से से जो मुसीबतें और ज़िल्लतें आ रही हैं और जिन परेशानियों में वह मुब्तिला हैं जो हज़ारों दुआ़ओं और वज़ीफ़ों के बावजूद भी नहीं टल रही हैं इस का सबसे बड़ा सबब यही है कि हम दीन की ख़िदमत और दअ़वत और लोगों की इस्लाह़ व हिदायत के काम को छोड़े हुए हैं जिस के लिए हम पैदा किये गये थे और ख़त्मे नुबूव्वत के बाद जिस के हम पूरे ज़िम्मेदार बनाए गये थे। और दुनिया का भी ऐसा ही क़ानून है कि जो सिपाही अपनी ख़ास ड्यूटी अदा न करे उस को मुअ़त्तल कर दिया जाता है और बादशाह जो सज़ा उस के लिए मुनासिब समझता है देता है।

आओ! आइन्दा के लिए इस फ़र्ज़ और इस ड्यूटी को अन्जाम देने का हम



सब अ़हद करें। अल्लाह तआ़ला हमारा मददगार हो। उस का वादा यह है किः

وَلَيَنصُرَنَّ اللّٰهُ مَن يَنصُرُهُ

(सूरः ह़ज-४०)

"अल्लाह उन लोगों की ज़रुर मदद करेगा जो उस के दीन की मदद करेंगे"।

## दीन पर इस्तिक़ामत

ईमान लाने के बाद बन्दे पर अल्लाह की तरफ़ से जो ख़ास ज़िम्मेदारियाँ आ़यद हो जाती हैं उन में से एक बड़ी ज़िम्मेदारी यह भी है कि बन्दह पूरी मज़बूती और हिम्मत के साथ दीन पर क़ायम रहे, और ख़्वाह ज़माना उस के लिए कैसा ही नमुवाफ़िक़ हो जाए वह किसी ह़ाल में दीन का सिरा हाथ से छोड़ने के लिए तैयार न हो, इसी का नाम "इस्तिक़ामत" है, क़ुर्आन शरीफ़ में ऐसे लोगों के लिए बड़े इनआ़मात और बड़े दर्जो का ज़िक्र किया गया है। एक जगह इर्शाद हैः

إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةُ
أَلَّا تَخَافُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَبْشِرُوا بِالْجَنَّةِ الَّتِي كُنتُمْ تُوعَدُونَ ۝
نَحْنُ أَوْلِيَآؤُكُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ ۚ وَلَكُمْ فِيهَا
مَا تَشْتَهِيٓ أَنفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَدَّعُونَ ۝ نُزُلًا مِّنْ غَفُورٍ رَّحِيمٍ ۝

(सूरः ह़ामीम सज्दः-३०,३१,३२)

"जिन लोगों ने इक़रार कर लिया (दिल से क़ुबूल कर लिया) कि हमारा रब बस अल्लाह है (और हम उस के मुस्लिम बन्दे हैं) और फिर वह इस पर ठीक ठीक क़ायम रहे, (यानी उस का इक़रार ह़क़ अदा करते रहे, और कभी इस से न हटे) उन पर अल्लाह की तरफ़ से फ़रिश्ते यह पैग़ाम लेकर उतरेंगे कि कुछ अन्देशा न करो, और किसी बात का रंज न करो, और उस जन्नत के मिलने से खुश रहो जिस का तुम से वादा किया जाता था। हम तुम्हारे

रफ़ीक़ हैं दुनयवी ज़िन्दगी में, और आख़िरत में, और तुम्हारे लिए उस जन्नत में वह सब कुछ होगा जो तुम्हारा जी चाहेगा, और तुम्हें वह सब कुछ मिलेगा जो तुम मांगो, यह बाइ़ज़्ज़त मेहमानी होगी तुम्हारे रब ग़फ़ूर व रह़ीम की तरफ़ से"।

सुब्ह़ान अल्लाह! दीन पर मज़बूती से क़ायम रहने वालों और बन्दग़ी का ह़क़ अदा करने वालों के लिए इस आयत में कितनी बड़ी बशारत है। सच तो यह है कि अगर जान माल सब कुछ क़ुर्बान करके भी किसी को यह दर्जा ह़ासिल हो जाए तो वह बड़ा ख़ुशनसीब होगा।

एक ह़दीस में है-

"रसूलुल्लाह (सल्ल०) से एक सह़ाबी (रज़ि०) ने अ़र्ज़ किया कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०)! मुझे कोई ऐसी नसीह़त फ़रमाइए कि आप (सल्ल०) के बाद फिर किसी से कुछ पूछने की ह़ाजत न हो। आप (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया। कहो बस अल्लाह मेरा रब है और फिर उस पर मज़बूती से जमे रहो (और उस के मुताबिक़ बन्दग़ी की ज़िन्दग़ी गुज़ारते रहो)"।

क़ुर्आन शरीफ़ में हमारी हिदायत के लिए अल्लाह तआ़ला ने अपने कई ऐसे वफ़ादार बन्दों के बड़े सबक़ आमूज़ वाक़िआ़त बयान फ़रमाए हैं जो बड़े सख़्त नमुवाफ़िक़ ह़ालात में भी दीन पर क़ायम रहे और बड़े से बड़ा लालच और सख़्त से सख़्त तकलीफ़ों का डर भी उन को दीन से नहीं हटा सका। उन में एक वाक़िआ़ तो उन जादूगरों का है जिन्हें फ़िरऔ़न ने ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) के मुक़ाबले के लिए बुलाया था और बड़े इनआ़म व इकराम का उन से वादा किया था। लेकिन ख़ास मुक़ाबले के वक़्त जब मूसा (अ़लै०) के दीन और उन की दअ़वत की सच्चाई उन पर खुल गई तो उन्होंने न तो इसकी परवाह की कि फ़िरऔ़न ने जिस इनआ़म व इकराम का और जिन बड़े बड़े ओ़हदों का वादा हम से किया है उन से हम मह़रूम रह जाएँगे, और न इस की परवाह की कि फ़िरऔ़न हमें कितनी सख़्त सज़ा देगा। बहरह़ाल उन्होंने उन सब ख़तरों से बेपरवाह होकर भरे मजमे में पुकार कर कह दिया कि "**اٰمَنَّا بِرَبِّ هَارُوْنَ وَ مُوْسٰی**" (यानी हारून और मूसा जब जिस परवरदिगार की बन्दग़ी की दअ़वत देते हैं हम उस पर ईमान ले आए)।

फिर जब ख़ुदा के दुश्मन फ़िरऔ़न ने उन को धमकी दी कि मैं तुम्हारे हाथ



पांव कटवा के सूली पे लटका दूँगा, तो उन्होंने पूरी ईमानी जुरात से जवाब दियाः

فَاقْضِ مَآ اَنْتَ قَاضٍ ؕ اِنَّمَا تَقْضِیْ هٰذِهِ الْحَیٰوةَ الدُّنْیَا ؕ اِنَّآ اٰمَنَّا بِرَبِّنَا
لِیَغْفِرَ لَنَا خَطٰیٰنَا (सूरः ताहा-७२,७३)

"तुझे जो हुक्म देना हो दे डाल, तू अपना हुक्म बस इस चन्द रोज़ा दुनयवी ज़िन्दगी ही में तो चला सकता है, और हम तो अपने सच्चे रब पर ईमान इस लिए लाए हैं कि वह (आख़िरत की अब्दी ज़िन्दग़ी में) हमाारे गुनाह बख़्शे"।

और इस से भी ज़्यादा सबक़ आमूज़ वाक़िआ़ ख़ुद फ़िरऔ़न की बीवी का है। आप को मालूम है कि फ़िरऔ़न मिस्र की बादशाहत का गोया अकेला मालिक व मुख़्तार था, और उस की यह बीवी मुल्क मिस्र की मलिका होने के साथ ख़ुद फ़िरऔ़न के दिल की भी गोया मालिक थी, बस इस से अन्दाज़ा कीजिए उस को दुनिया की कितनी इ़ज़्ज़त और कितना ऐ़श ह़ासिल होगा। लेकिन जब मूसा (अ़लै०) के दीन और उन की दअ़वत की सच्चाई अल्लाह की उस बन्दी पर खुल गई तो उस ने बिल्कुल इस की परवाह न की कि फ़िरऔ़न मुझ पर कैसे ज़ुल्म करेगा, और दुनिया के इस शाहाना ऐ़श के बजाए मुझे कितनी मुसीबतें और तकलीफ़ झेलनी पड़ेंगी। अलग़र्ज़ इन सब बातों से बिल्कुल बेपरवाह होकर उस ने अपने ईमान का एलान कर दिया, और फिर ह़क़ के रास्ते में अल्लाह की उस बन्दी ने ऐसी ऐसी तकलीफ़ें उठाईं जिन के ख़याल से रोंगटे खड़े होते हैं और कलेजा मुँह को आता है। फिर अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से उन को यह दर्जा मिला कि क़ुर्आन शरीफ़ में बड़ी इ़ज़्ज़त के साथ उन का ज़िक्र किया गया, और मुसलमानों के लिए उन के सब्र और उन की क़ुर्बानी को नमूना बताया गया। इर्शाद हैः-

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِیْنَ اٰمَنُوا امْرَاَتَ فِرْعَوْنَ ۘ اِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِیْ
عِنْدَكَ بَیْتًا فِی الْجَنَّةِ وَ نَجِّنِیْ مِنْ فِرْعَوْنَ وَ عَمَلِهٖ وَ نَجِّنِیْ مِنَ
الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ ۟ (सूरः तह़रीम-११)

"और ईमान वालों के लिए अल्लाह तआ़ला मिसाल बयान करता है,

> फ़िरऔ़न की बीवी (आसिया) की, जब कि उस ने दुआ़ की कि ऐ मेरे परवरदिगार तू मेरे वास्ते जन्नत में अपने क़रीब के मुक़ाम में एक घर बना दे और मुझे फ़िरऔ़न के शर से और उस की बदआ़मालियों से निजात दे, और इस ज़ालिम क़ौम से मुझे रिहाई बख़्श दे"।

ह़दीस शरीफ़ में है कि मक्का मुअ़ज़्ज़मा में जब मुश्रिकों ने मुसलमानों को बहुत सताया और उन के ज़ुल्म ह़द से बढ़ गये तो बाज़ सह़ाबा (रज़ि०) ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से अ़र्ज़ किया कि : हुज़ूर (सल्ल०)! अब उन ज़ालिमों के ज़ुल्म ह़द से बढ़ रहे हैं, लिहाज़ा आप (सल्ल०) अल्लाह तआ़ला से दुआ़ फ़रमाएँ। तो हुज़ूर (सल्ल०) ने जवाब दिया किः "तुम अभी से घबरा गये! तुम से पहले ह़क़ वालों के साथ यहाँ तक हुआ है कि लोहे की तेज़ कंघियाँ उन के सरों में पेवस्त करके निकाल दी जाती थीं और किसी के सर पर आरा चला के बीच से दो टुकड़े कर दिये जाते थे, लेकिन ऐसे सख़्त वह़शियाना ज़ुल्म भी उन को अपने सच्चे दीन से नहीं फेर सकते थे, और वह अपना दीन नहीं छोड़ते थे"।

## दीन की कोशिश और नुसरत व ह़िमायत

ईमान वालों से अल्लाह का ख़ालिस मुताल्बा और बड़ा ताकीदी हुक्म एक यह भी है कि जिस सच्चे दीन को और अल्लाह की बन्दग़ी वाले जिस अच्छे तरीक़े को उन्होंने सच्चा और अच्छा समझ कर अख़्तियार किया है, वह उस को ज़िन्दह और सरसब्ज़ रखने के लिए और उस को ज़्यादा से ज़्यादा रिवाज देने के लिए जो कोशिश कर सकते हों ज़रुर करें। दीन की ख़ास ज़बान में इस का नाम जिहाद है। और मुख़्तलिफ़ क़िस्म के ह़ालात में उस की सूरतें मुख़्तलिफ़ होती हैं।

मस्लन अगर किसी वक़्त ह़ालात ऐसे हों कि ख़ुद अपने घर वालों का और अपनी क़ौम और जमाअ़त का दीन पर क़ायम रहना मुश्किल हो और उस की वजह से ख़ुदा न ख़्वास्ता मुसीबतें और तकलीफ़ें उठानी पड़ती हों तो ऐसे ह़ालात में ख़ुद अपने को और अपने घर वालों और अपनी क़ौम वालों को दीन पर साबित क़दम रखने की कोशिश करना और मज़बूती से दीन पर जमे रहना भी जिहाद की एक क़िस्म है। इसी तरह़ अगर किसी वक़्त मुसलमान कहलाने वाली क़ौम जिहालत और



ग़फ़लत की वजह से अपने दीन से दूर होती जा रही हो तो उस की इस्लाह़ और दीनी तर्बियत की कोशिश करना और उस में अपनी जान व माल ख़र्च करना भी जिहाद की एक क़िस्म है।

इसी तरह़ अल्लाह के जो बन्दे अल्लाह के सच्चे दीन से और उस के नाज़िल किये हुए अह़काम से बेख़बर हैं, उनको और सच्ची हमदर्दी के साथ दीन का पैग़ाम पहुँचाने और अल्लाह के अह़काम से वाक़िफ़ कराने में दौड़ धूप करना भी जिहाद की एक सूरत है।

और अगर कोई ऐसा वक़्त हो कि अल्लाह व रसूल (सल्ल०) पर ईमान रखने वाली जमाअ़त के हाथ में इज्तिमाई क़ुव्वत और ताक़त हो, और अल्लाह के दीन की ह़िफ़ाज़त और नुसरत के मक़सद का तक़ाज़ा यही हो कि उस के लिए इज्तिमाई ताक़त इस्तेमाल की जाए तो इस वक़्त अल्लाह के मुक़र्रर किये हुए क़वानीन के मुताबिक़ दीन की ह़िफ़ाज़त और नुसरत के लिए ताक़त का इस्तेमाल करना ऐन जिहाद है। लेकिन उस के जिहाद और इ़बादत होने की दो ख़ास शर्तें हैंः एक यह कि उन का यह इक़दाम किसी ज़ाती या क़ौमी मफ़ाद की ग़रज़ से या ज़ाती या क़ौमी तअ़स्सुब व दुश्मनी की वजह से न हो बल्कि असल मक़सद सिर्फ़ अल्लाह के हुक्म की तअ़मील और उस के दीन की ख़िदमत हो। दूसरे यह कि उस के क़वानीन की पूरी पाबन्दी हो। इन दो शर्तों के बग़ैर अगर ताक़त का इस्तेमाल होगा तो दीन की नज़र में वह जिहाद नहीं, फ़साद होगा।

इसी तरह़ ज़ालिम व जाबिर हुक्मरानों के सामने (चाहे वह मुसलमानों में से हों या ग़ैर मुस्लिमों में से) ह़क़ बात कहना भी जिहाद की एक ख़ास क़िस्म है, जिस को ह़दीस शरीफ़ में **'अफ़ज़लुल जिहाद'** फ़रमाया गया है।

दीन की कोशिश और ह़िमायत व ह़िफ़ाज़त की यह सब सूरतें अपने अपने मौक़े पर इस्लाम के फ़रायज़ में से हैं और जिहाद का लफ़्ज़ (जैसा कि ऊपर हम ने बताया) दर्जा ब दर्जा उन सब को शामिल है। अब इस की ताकीद और फ़ज़ीलत के मुताल्लिक़ चन्द आयतें और ह़दीसें इस तरह हैंः-

وَجَاهِدُوا فِي اللهِ حَقَّ جِهَادِهِ ۚ هُوَ اجْتَبٰكُمْ (सूरः ह़ज-७८)

" और कोशिश करो अल्लाह की राह में जैसा कि उस का हक़ है, उस ने (अपने दीन के लिए) तुम को मुन्तख़ब किया है"।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ تِجَارَةٍ تُنجِيكُم مِّنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ۝ تُؤْمِنُونَ
بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنفُسِكُمْ ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ
لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي
مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَمَسَاكِنَ طَيِّبَةً فِي جَنَّاتِ عَدْنٍ ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝

(सूरः सफ़-१०,११,१२)

"ऐ ईमान वालों! क्या मैं तुम्हें एक ऐसी तिजारत और ऐसे सौदे का पता दूँ जो दर्दनाक अ़ज़ाब से तुम को निजात दिला दे। वह यह है कि अल्लाह और उस के रसूल (सल्ल०) पर तुम ईमान रखो, और उस की राह में (यानी उस के दीन के लिए) अपने माल और अपने जान से कोशिश करो, यह निहायत अच्छा सौदा है तुम्हारे लिए अगर तुम्हें समझबूझ हो (अगर तुम ने अल्लाह व रसूल (सल्ल०) पर ईमान और उस की राह में जान व माल से कोशिश की, यह शर्त पूरी कर दी, तो) वह तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और तुम को (आ़लमे आख़िरत के) उन बाग़ों में दाख़िल कर देगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, और ग़ैर फ़ानी जन्नत के उ़म्दह मकानों में तुम को बसाएगा, यह तुम्हारी बड़ी कामियाबी है।"

ह़दीस शरीफ़ में है, रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने एक दिन ख़ुत्बः दिया, और उस में इर्शाद फ़रमायाः-

"अल्लाह पर सच्चा ईमान और दीन की कोशिश करना सब आ़माल से अफ़ज़ल है।"

एक और ह़दीस में है, हु़ज़ूर (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमायाः

"तुम में किसी शख़्स का ख़ुदा की राह में (यानी अल्लाह के दीन की जद्दोजहद



और उस की नुसरत व ह़िमायत में) खड़ा होना और कुछ ह़िस्सा लेना अपने घर के गोशे में रह कर सत्तर साल नमाज़ पढ़ने से अफ़्ज़ल है।"

# शहादत की फ़ज़ीलत और शहीदों का मर्तबा

दीने ह़क़ पर, यानी इस्लाम पर क़ायम रहने की वजह से अगर अल्लाह के किसी बन्दे या बन्दी को मार डाला जाए, या दीन की कोशिश और ह़िमायत में किसी ख़ुशनसीब की जान चली जाए तो दीन की ख़ास ज़बान में उस को शहीद कहते हैं, और अल्लाह के यहाँ ऐसे लोगों का बहुत बड़ा दर्जा है। ऐसे लोगों के मुताल्लिक़ क़ुर्आन मजीद में फ़रमाया गया है कि उन को हरगिज़ मरा हुआ न समझना, बल्कि शहीद हो जाने के बाद अल्लाह की तरफ़ से उन को ख़ास ज़िन्दगी मिलती है, और उन पर तरह़-तरह़ की नेअ़मतें और बारिशें होती रहती हैं।

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتًا ۚ بَلْ أَحْيَاءٌ عِندَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُونَ ۝

(सूरः आले इमरान-१६९)

"जो लोग अल्लाह की राह में (यानी उस के दीन के रास्ते में) मारे जायें, उन को हरगिज़ मुर्दा न समझो, बल्कि वह ज़िन्दा हैं अपने परवरदिग़ार के पास, उन को तरह़-तरह़ की नेअ़मतें दी जाती हैं"।

शहीदों पर अल्लाह तआ़ला का कैसा प्यार होगा, और उन को कैसे-कैसे इनआ़मात मिलेंगे, इस का अन्दाज़ा हुज़ूर (सल्ल०) की इस ह़दीस से किया जा सकता है, हु़ज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमायाः-

"जन्नतियों में से कोई शख़्स भी यह न चाहेगा कि उस को फिर दुनिया में वापस भेजा जाए, चाहे उन से कहा जाए कि तुम को सारी दुनिया दे दी जाएगी। लेकिन शहीद इस की आरज़ू करेंगे कि एक दफ़ा नहीं उन को दस दफ़ा फिर दुनिया में भेजा जाए ताकि हर दफ़ा वह अल्लाह की राह में शहीद होकर आएँ। उन्हें यह आरज़ू शहादत के मर्तबे और उस के ख़ास इनआ़मात को देखकर होगी"।

शहादत की तमन्ना और उस के शौक़ में ख़ुद रसूलुल्लाह (सल्ल०) का हाल यह था कि एक ह़दीस में इर्शाद फ़रमायाः

## मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया–

"क़सम है उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है, मेरा जी चाहता है कि मैं अल्लाह की राह में क़त्ल किया जाँऊ फिर मुझे ज़िन्दह कर दिया जाए और फिर मैं क़त्ल किया जाँऊ और फिर मुझे ज़िन्दह किया जाए और फिर मैं क़त्ल किया जाँऊ, फिर मुझे ज़िन्दग़ी बख़्श दी जाए और फिर मैं क़त्ल किया जाँऊ"।

एक ह़दीस में है, हु़ज़ूर (सल्ल०) का फ़रमान आता है कि शहीद को अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से जो इनआ़मात मिलते हैं उन में उस को फ़ौरी बख़्शिश, क़ब्र के अ़ज़ाब से निजात, ह़श्र में घबराहट और परेशानी से अम्न, वक़ार की निशानी सर पर ताज और क़रामतदारों के ह़क़ में उस की सिफ़ारिश क़ुबूल की जाएगी।

एक ह़दीस में है, हु़ज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमाया।

"शहीद होने वाले के सब गुनाह माफ़ कर दिये जाते हैं। अलबत्ता अगर किसी आदमी का क़र्ज़ उस के ज़िम्मे होगा तो उस का बोझ बाक़ी रहेगा"।

और याद रहे कि सवाब और फ़ज़ीलत इसी पर मौक़ूफ़ नहीं है कि दीन के रास्ते में आदमी मार ही डाला जाए, बल्कि अगर दीन की वजह से किसी ईमान वाले को सताया गया, बेइ़ज़्ज़त किया गया, मारा पीटा गया, उस का माल लूटा गया या और किसी तरह़ उस को नुक़सान पहुँचा दिया गया तो इस सब का भी अल्लाह तआ़ला के यहाँ बहुत बड़ा सवाब है, और अल्लाह तआ़ला ऐसे लोगों को इतने बड़े मर्तबे देगा कि बड़े बड़े आ़बिद और ज़ाहिद उन पर रश्क करेंगे।

जिस तरह़ दुनयावी हुकूमतों में इन सिपाहियों की बड़ी इ़ज़्ज़त होती है और उन्हें बड़े-बड़े इनआ़मात और ख़िताबात दिये जाते हैं जो अपनी हुकूमत की वफ़ादारी और ह़िमायत में चोटे खाएँ, मारे पीटे जाएँ, ज़ख़्मी किये जायें और फिर भी इस हुकूमत के वफ़ादार रहें, इस तरह़ अल्लाह के यहाँ उन बन्दों की ख़ास इ़ज़्ज़त है जो अल्लाह के दीन पर चलने और दीन पर क़ायम रहने के जुर्म में, या दीन की तरक़्क़ी और सरसब्ज़ी के लिए कोशिश करने के सिलसिले में मारे पीटे जाएँ या



बेइ़ज़्ज़त किये जाएँ या दूसरी तरह़ के नुक़सानात उठाएँ। क़ियामत के दिन ऐसे लोगों को जब ख़ास इनआ़मात बटेंगे और अल्लाह तआ़ला अपने ख़ास एज़ाज़ व इकराम से उन्हें नवाज़ेगा, तो दूसरे लोग ह़सरत करेंगे कि काश! दुनिया में हमारे साथ भी यही किया गया होता दीन के लिए हम ज़लील किये गये होते, मारे पीटे गये होते, हमारे जिस्मों को ज़ख़्मी किया गया होता, ताकि इस वक़्त यही इनआ़मात हम को भी मिलते।

इसलिए ज़रुरी है कि अपने रसूल (सल्ल०) की सीरत के मुताबिक़ ज़िन्दग़ी ढ़ालने की कोशिश करें।

दुआ़ओं का मोहताज<br>
मु० सरवर फ़ारूक़ी नदवी

# Writer at a glance

## Mufti Muhammad Sarwar Farooqui Nadwi (*Aacharya*)

**Name** : **Muhammad Sarwar**

**Father's name** : **Mohd Haneef**

### Educational Background.

**Basic** : **Intermediate,** (Allahabad)

**Higher Education** : **M.A.** (Lucknow)

**Arabic** : **Almiat, Fazeelat & Iftah,** (Darul-Uloom- Nadwatul Ulama Lucknow (U.P.) India.

**Islamic Tadreebi Course** : **Jamia Islamiya** **Madina Munawarah** (Saudi Arabia)

**Urdu** : **Adeeb Kamil & Mua'llim**

**Sanskrit** : **Aacharya** (Banaras).

**Computer skill** : **P.G.D.C.A**

**Major Research** : **Qur'an and Fiqah,** Darul-Uloom Nadwatul-Ulama, Lucknow, U.P. (India)

### Present Posts

**President** : ***Jamiat Payam-e-Amn,*** (Educational Society) lucknow, U.P. (India)

**Manager** : **Universal Peace Foundation,** Lucknow, U.P. (India)

**Director** : ***Markaz Ul-Tawheed Al-Islami*** lucknow, U.P. (India)

**Managing Director** : **Jamia Dar-e-Arqam** Fatehpur, Haswa, U.P. (India)

**Manager** : **Jamia Dar-e-Arqam** (Educational Society) Allahabad (India)

**Chairman** : **Arqum Model School** Lucknow, U.P. (India)

**Director** : ***Quran, Amn Research Academy,*** Lucknow, U.P. (India)

**General Secretary** : ***All India, Jamiat Darul-Aml,*** lucknow, U.P. (India)



## (मुफ़स्सिरे क़ुर्आन) मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साहब द्वारा लिखित हिन्दी पुस्तकें

1. क़ुर्आन का पैग़ाम (क़ुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद)
2. क़ुर्आन का पैग़ाम (क़ुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद)
3. क़ुर्आन का पैग़ाम (क़ुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद)
4. क़ुर्आन का पैग़ाम (पारा अम्म अनुवाद और व्याख्या)
5. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (भाग-1)
6. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (भाग-2)
7. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (भाग-3)
8. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (भाग-4)
9. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (भाग-5)
10. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (भाग-6)
11. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (भाग-7)
12. इस्लाम धर्म क्या है? (क़ुबूले ह़क़ के बाद इस्लामी कोर्स)
13. जिहाद, आतंकवाद और इस्लाम
14. हिन्दी पत्रकारिता और मीडिया लेखन
15. अन्तिम सन्देष्टा कहाँ, कब और कौन (Hard bound)
16. अन्तिम सन्देष्टा कहाँ, कब और कौन (Paper back)
17. जन्नत के ह़ालात और जन्नती
18. कुफ़्र और शिर्क की ह़क़ीक़त
19. रसूलुल्लाह (सल्ल०) का ह़ुलिया मुबारक और आप (सल्ल०) की सुन्नतें
20. ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की प्रमाणित जीवनी
21. अल्लाह के अधिकार और बन्दों के अधिकार
22. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की बातें (अअ़माले ह़स्ना की रौशनी में)
23. सह़ाबा का इस्लाम और उसके बाद
24. इस्लामी राज्य की शासन व्यवस्था
25. अज़ान क्या है?
26. आओ नमाज़ की ओर
27. रोज़ः का हुक्म और उसके मसायल
28. ह़ज और उ़मरा का आसान तरीक़ा
29. ज़कात का हुक्म और उसके मसायल
30. उ़मरह का आसान तरीक़ा
31. आपके सवालों का आसान ह़ल (भाग एक)
32. झाड़, फूँक, जादू, टोना और तअ़वीज़,गंडे
33. इस्लाम की बुनियादी मालूमात
34. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत
35. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की पाकीज़ह ज़िन्दगी
36. बीवी-शौहर की ज़िम्मेदारियाँ *(शरीअ़त की रोशनी में)*
37. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और मीडिया लेखन
38. सूर-ए-फ़ातिह़ा की तफ़्सीर
39. तौह़ीद की ह़क़ीक़त (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)
40. पवित्र क़ुर्आन का सन्देश इन्सानी दुनिया के नाम
41. इस्लाम धर्म तल्वार से फैला या सदाचार से
42. ग़ैर मुस्लिमों के साथ व्यवहार (ऐतिहासिक दृष्टि से)
43. ग़ैर मुस्लिमों से सम्बन्ध और धार्मिक आज़ादी
44. इस्लामी विरासत की तक़्सीम एक नज़र में
45. मीरास की तक़्सीम (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
46. लाइलाहा इल्लल्लाहु की गवाही
47. मोबाईल से सम्बन्धित मसायल (शरीअ़त की रोशनी में)
48. अल्लाह के प्यारे नबी (सल्ल०) एक नज़र में
49. सृष्टि का सृष्टा कौन?
50. ईशदूतों का धर्म और परलोक विश्वास
51. प्राकृतिक नियम और परमेश्वर से इस्लाम का सम्बन्ध
52. मुह़र्रम की ह़क़ीक़त
53. इस्लाम?

### उर्दू पुस्तकें

54. मअ़ानी क़ुर्आनुल् करीम (लफ़्ज़ी तर्तीब के एतिबार से रवाँ उर्दू तर्जुमः)
55. आख़िरी रसूल कहाँ, कब और कौन?
56. ग़ैर मुस्लिमों से तअ़ल्लुक़ात और मज़हबी आज़ादी
57. इस्लाम में जिज़्या, ख़िराज और ज़िम्मियों के अख़्तियारात
58. क़ुर्आन के मिसाली नमूने और लाज़वाल मोअ़जिज़ा
59. क़ुर्आन में इन्सान का मक़ाम और उस का अअ़ला मक़्सद

60. आमाल को बातिल करने वाली चीज़ें और नियत की अहमियत
61. इस्लामी क़ानूने विरासत और मीरास की तक़सीम
62. उम्मते मुहम्मदिया की इ़ज़्ज़त का मेअ़यार और बनी इस्राईल
63. कायनात के अ़जायबात और इन्सान का अल्लाह से तअ़ल्लुक़
64. ग़ैर मुस्लिमों से दोस्ती या दुश्मनी (एतिराज़ के तनाज़ुर में)
65. इस्लाम के ख़िलाफ़ इल्ज़ामात और उस की दअ़वत का असर
66. इस्लाम में ग़ैर मुस्लिमों के हुक़ूक़
67. हिन्दू धर्म, फ़िर्क़े तन्ज़ीमें और इदारों का तआ़रुफ़
68. ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का ज़िक्र और मूर्तिपूजा की मुमानियत वेदों की दुनिया में
69. बौद्ध धर्म और इस्लाम
70. कलिमा-ए-तय्यबः की ह़क़ीक़त और उस के तक़ाज़े
71. ग़ैर मुस्लिमों में तरीक़-ए-दअ़वत उस्लूबे अंबिया की रोशनी में
72. अल्लाह तआ़ला का तआ़र्रुफ़ और कलिम-ए-शहादत के फ़ज़ायल
73. क़ियामत तक के फ़ित्ने (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पेशीनगोई की रोशनी में)
74. तलाक़ का इस्लामी तरीक़ा (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)
75. अल्लाह की तरफ़ से रिज़्क़ की तक़सीम और कमज़ोर तब्क़े की किफ़ालत
76. क़ुर्आन के मुताबिक़ दौलत का इस्तेमाल
77. ज़कात और मसारिफ़े ज़कात (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)
78. रसलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत *(मुस्तनद क़ुतुबे सीरत की रोशनी में)*
79. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत के अनमोल मोती
80. रसूलुल्लाह (सल्ल०) का हुलिया मुबारक और आप (सल्ल०) की सुन्नतें
81. जन्नत के ह़ालात और जन्नत की नेअ़मतों का ज़िक्र
82. कुफ़्र व शिर्क की ह़क़ीक़त (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)
83. कुफ़्र शिर्क और फ़िस्क़ का ज़िक्र और सह़ाबा से मुतअ़ल्लिक़ अ़क़ीदा
84. क़ुर्आन के मुताबिक़ दअ़वत और इस्लामी जिहाद
85. ज़बरदस्ती इस्लाम क़ुबूल करवाने की मुमानिअ़त
86. दाढ़ी की अहमियत (शरीअ़त की रोशनी में)
87. मदारिसे इस्लामिया के निसाब का तारीख़ी जायज़ा
88. रोज़ः, तरावीह़, सद्क़ः और एतिकाफ़ के एह़काम व मसायल
89. ह़ज और उ़मरा का मुकम्मल तरीक़ा
90. मुसाफ़िर और सफ़र के मसायल
91. काग़ज़ी नोट और बैअ़ की ह़क़ीक़त
92. इस्लामी क्विज़ (सवाल व जवाब की रोशनी में)
93. तफ़्सीर का बुनियादी मअ़ख़ज़
94. हिन्दुस्तान में क़ुर्आन के तर्जुमे की शुरुआत और चन्द तफ़ासीर का तआ़र्रुफ़
95. इस्लाम में तिजारत का तरीक़ा
96. इस्लामी मआ़शियात का तक़ाबुली जायज़ा
97. इस्लाम का ज़रई निज़ाम
98. दौलत की पैदाईश और अतियाते क़ुदरत
99. मुसलमानों के फ़िर्क़े और उनके अ़क़ायद
100. इस्लाम में औ़रत का मक़ाम
101. तअ़द्दुदे इज़्दिवाज और इस्लाम (मज़ाहिब आ़लिम की रौशनी में)
102. ह़राम, ह़लाल और मुबाह चीज़ें
103. ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की सिफ़ात (अह़ादीस की रौशनी में)
104. जहन्नम के ह़ालात और जहन्नमी (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)
105. मुस्तनद मस्नून दुआ़एँ
106. इस्लाम की दअ़वत का असर इन्सानी दुनिया पर
107. क़ुर्आनी आयात और इस्लामी मुआ़शरा
108. आ़माल सालिह़ा (भाग-1)
109. आ़माल सालिह़ा (भाग-2)
110. अल्लाह तआ़ला का तआ़र्रुफ़ और कलिम-ए-शहादत के फ़ज़ायल
111. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की करीमाना अख़्लाक़ और आप (सल्ल०) की सीरत



112. आख़िरत का अ़क़ीदा (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)
113. इख़्लास की फ़ज़ीलत (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)
114. दअ़वत की ज़िम्मेदारी (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)
115. ई़दैन व क़ुर्बानी के मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
116. ख़ातिमुन्नबीईन (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)
117. जिन्नात और शैतान का ज़िक्र (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
118. नबियों की सीरत (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)
119. ईमानियात, अ़क़ायद और नज़र से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
120 इ़ल्म से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
121. तहारत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
122. ह़िफ़ाज़ते क़ुर्आन से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
123. नमाज़ व जमाअ़त से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
124. ई़दैन व जुमअ़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
125. तरावीह़ व एतिकाफ़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
126. सफ़र और सद्क़-ए-फ़ित्र से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
127. क़ुर्बानी से मुतअल्लिक़ मसायल
128. तलाक़ व इद्दत और नफ़्क़ा से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
129. निकाह से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
130. ह़िबा व जहेज़ से मुतअ़ल्लिक मसायल
131. वक़्फ़ से मुतअ़ल्लिक मसायल
132. मस्जिद से मुतअ़ल्लिक मसायल
133. तिजारत की मुख़्तलिफ़ क़िस्मों से मुतअ़ल्लिक मसायल
134. वसीयत व मीरास से मुतअ़ल्लिक मसायल
135. अज़ान व इक़ामत से मुतअ़ल्लिक मसायल
136. तर्बियत, रज़ाअ़त व अ़क़ीक़ा से मुतअ़ल्लिक मसायल
137. ज़कात से मुतअ़ल्लिक मसायल
138. ह़ज से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
139. इमामत से मुतअ़ल्लिक मसायल
140. क़िरत से मुतअ़ल्लिक मसायल
141. सज्द-ए-तिलावत से मुतअ़ल्लिक मसायल
142. इस्लामी पर्दा (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
143. मीरास से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
144. मुह़र्रम की ह़क़ीक़त और आ़शूरा के वाक़िआ़त
145. नबियों व सह़ाबा का ज़रिया-ए-मआ़श
146. रसूल करीम (सल्ल०) के बेटे और बेटियाँ
147. सह़ाबियात के अहम वाक़िआ़त
148. रसूल करीम (सल्ल०) की अज़वाज मुतह्हरात
149. ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) और जज़ीरे अ़रब

## अ़रबी पुस्तकें

150. ग़ैर अ़रबी रस्मुलुख़त में क़ुर्आन की इशाअ़त
151. मन्ज़ुतुल मराह फ़ी ज़ौइल इस्लाम वल्अद्यान वल्हज़ारात अल्मुख़्तलह
152. अल् इन्सान फ़ी ज़ौइल क़ुर्आन वस्सुन्नह
153. नुब्जतु अ़न सिफ़ाति रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम
154. ग़ज़्च-ए-हुनैन व तायफ़ फ़ी ज़ौविल् क़ुर्आन वल् सुन्नह
155. अस्बाब तह़बतुल् अअ़माल वल् हमियतुलनिया फ़ी ज़ौइल क़ुर्आन वल् सुन्नह
156. अल् फ़ितन अल् वाक़िअ़ः इला क़ियामः अल् साअ़ह फ़ी ज़ौइल अह़ादीस अल् शरीफ़
157. अल् नबी अल् ख़ातिम मन, मता, वआईन फ़ी ज़ौइल कुतुबुल् हिन्दूसीया वद्दिनातुल मुख़्तलिफ़ा
158. अल्हिन्दूसिया फिरक़ुहा, अक़ाइदोहा, मुनज़्ज़िमातुहा व अहदाफ़ुहा
159. अहमयतुल् दअ़वह वल् तब्लीग़ फ़ी ज़ौइल क़ुर्आन वल् सुन्नह
160. ज़िक्र मुह़म्मदिन (सल्ल०) फ़िल् वेद
161. अत्तअ़रीफ़ुलवजीज़ बिदियानी बूजा
162. तअ़द्दुदे अज़्ज़ौवजात वल् इस्लाम फ़ी जौए दियानात

## अंग्रेज़ी पुस्तकें

163. मुहम्मद दी लास्ट प्रोफ़ेट अन्डर दी शेड ऑफ़ वेद, उपनिषद ऐण्ड पुराण
164. मुहम्मद (सल्ल०) एण्ड स्टेटस आफ़ वरशिप

165. बेसिक टीचिंग आफ़ इस्लाम
166. दी स्वॉड आफ़ इस्लाम
167. अज़ान, ए कालिंग फ़ार ह्यिूमेनिटी
168. इस्लाम?

## अनुवाद की हुई पुस्तकें

169. मुन्तख़ब अहादीस
(लेखक- हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ कान्धलवी रह०)
170. क़ादियानियत नुबूवते मुहम्मदी के ख़िलाफ बग़ावत
(लेखक-इमामे हरम अब्दुल्लाह बिन अस्सुबय्यिल रह०)
171. दारे अरक़म का एहसान इन्सानी दुनिया पर
(लेखक- हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अ़ली हसनी नदवी रह०)
172. मानवता आज भी उसी चौखट की मुहताज़ है
(लेखक- मौलाना मुहम्मद हसनी रह०)
173. रमज़ान का तोहफ
174. यक्साँ सिविल कोड और महिलाओं के अधिकार (लेखक- मौलाना मुहम्मद राबेअ़ हसनी नदवी)
175. मालिक व मख़्लूक़ श्रेष्ठ कौन?
(विचारक- मुहम्मद मुस्तफ़ा क़ादरी)
(तस्हीह व तर्तीब- मु० मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी)
176. यतीमों की किफ़ालत
(लेखक-मुहम्मद आमिर सिद्दीक़ी नदवी)
177. दो सौ मआशरती मसायल
178. तफ़्सीर फ़ारुक़ी (जिल्द अव्वल)
179. तफ़्सीर फ़ारुक़ी (जिल्द दोम)
180. तफ़्सीर फ़ारुक़ी (जिल्द सोम)
181. तारीख़-ए-इस्लाम
182. क़ससुलू अम्बिया
183. मजमुआ़ अहादीस
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
184. दुआ़ के आदाब (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
185. इस्लाम के अ़दालती फ़ैसले
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
186. सीरत-ए-सहाबा
187. क़ुर्बानी से मुतअ़ल्लिक़ मसॉयल
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
188. तहारत से मुतअ़ल्लिक़ मसॉयल
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
189. इल्म से मुतअ़ल्लिक मसायल
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
190. ईमानियात, अ़क़ायद और नज़र से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
191. ईदैन व जुमअ़ः से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
192. मदारिस से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
193. हिबा व जहेज़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
194. सूद से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
95. सफ़र और सद्क़ः फ़ित्र से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
196. निकाह से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
197. तलाक़ व इद्दत और नफ़्क़ा से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
198. नमाज़ व जमाअ़त से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
199. ज़कात से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
200. हज से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
201. इमामत से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
202. क़िराअत से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
203. तिजारत की मुख़्तलिफ़ क़िस्मों से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
204. वसीयत व मीरास से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
205. अज़ान व इक़ामत से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
206. तर्बियत, रज़ाअत व अ़क़ीक़ा से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
207. अ़लामात क़ियामत (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
208. सज्दः से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
209. वक़्फ़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
210. मस्जिद से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)



211. इल्म व उ़ल्मा से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
212. तक़्लीद व इज्तिहादी की शरई हैसियत
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
213. सज्दः सहू से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
214. बिद्अ़त की नहूसत से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
215. किरायेदारी से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
216. कारोबार में शिर्कत से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
217. मीरास से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
218. सुन्नत व नवाफ़िल से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
219. इस्लाह-ए-मुआ़शरह से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
220. औ़रतों के मख़्सूस मसायल
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
221. इन्सानी अअ़ज़ा से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
222. मय्यत से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
223. रमज़ान, रोज़ः और तरावीह से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
224. एतिकाफ़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
225. ज़मीन से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
226. रुयतुल हिलाल से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)

# रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) का हुलिया मुबारक
# और
# आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की सुन्नतें

इसमें हुज़ूर (सल्ल०) का हुलिया मुबारक और आप (सल्ल०) के खाने, पीने, सोने, जागने कपड़ा पहनने, कंघा करने, तेल लगाने, नाख़ून काटने, इस्तिंजा करने, जूता पहनने, अंगूठी पहनने, मस्जिद और घर में दाख़िल होने, बाज़ार जाने, गुफ़्तगू करने, वुज़ू, ग़ुस्ल, अज़ान, नमाज़, दुआ़, रमज़ान, ईदैन, सफ़र, सलाम, निकाह, मय्यित और उससे मुतअ़ल्लिक़ सुन्नतों से लेकर आप (सल्ल०) के अख़लाक़ व आ़दात का तफ़्सील से ज़िक्र है।

मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारुक़ी नदवी

प्रकाशक–

**मकतबः पयामे अम्न**

नदवा रोड, डालीगंज, लखनऊ-20 (यू०पी०) इण्डिया